ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

चैत्र २०८२ अप्रैल २०२५

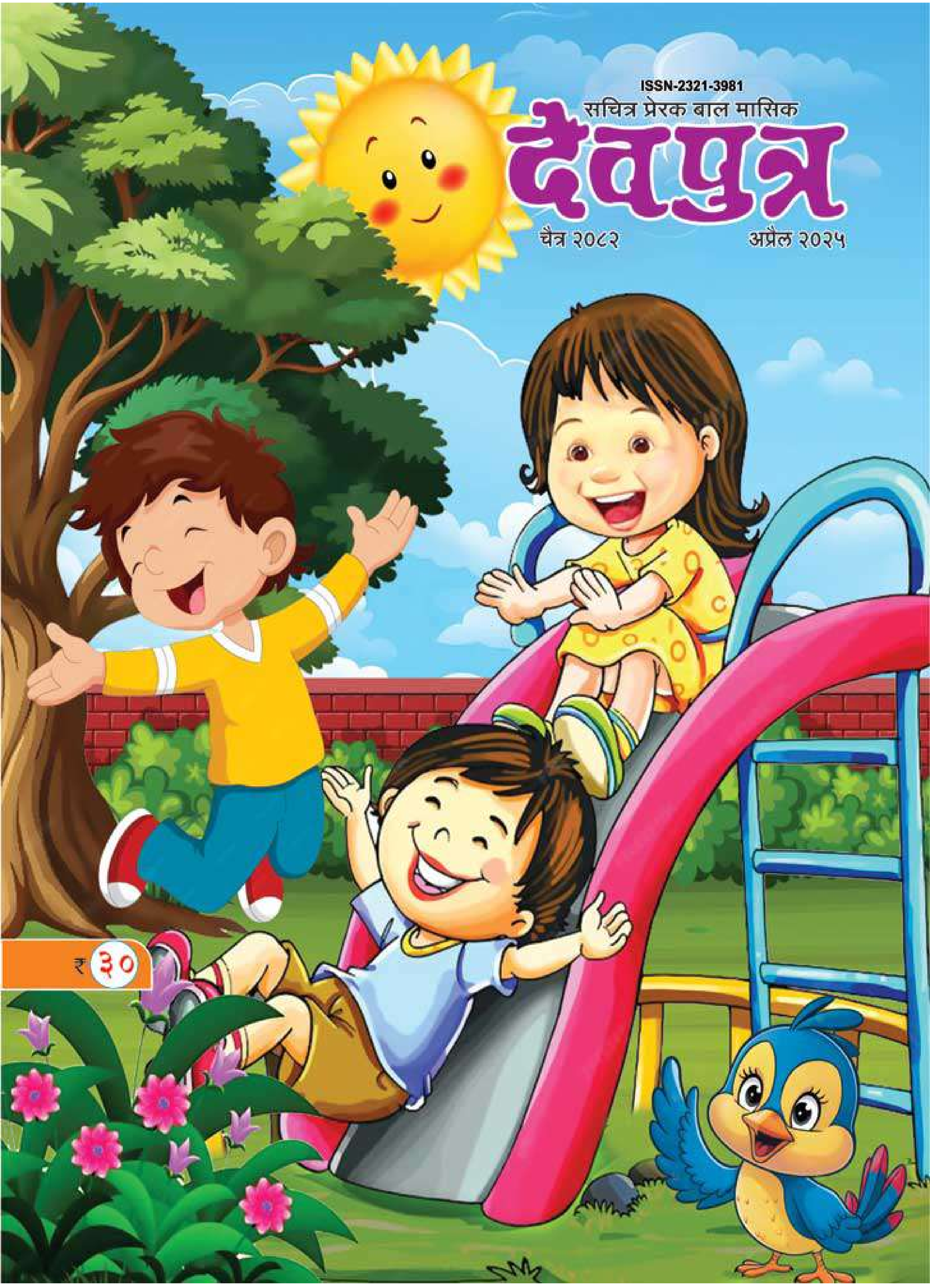

₹ ३०

कविता

मीठी लोरी गाना

– डॉ. प्रीति प्रवीण खरे

आसमान से चंदा मामा, सबको ये समझाते।
रात हो गई सो जाओ तुम, काहे समय गँवाते।
अम्मा मेरी मुझे सुला दो,
आम तले की छैंया।
ठंडी पवन झुलाए मुझको,
गोदी लेना कैंया।
सेमल के फूले गद्दे पे,
हो तीतर-सा तकिया।
खादी वाली चादर ओढ़ूँ,
जैसे मेरा पकिया।
चिड़ियों के नीड़ों में देखूँ,
सोते कैसे बच्चे।
गौरेया ने पंख उढ़ाए,
दिखते कितने अच्छे।

तितली का परिवार सो रहा, बापू देते पहरा,
माँ उनकी सिर सहलाती, नाज उठाती नखरा।
काहे शोर मचाता झींगुर,
किसको पास बुलाए।
अँधियारा मिटने वाला है,
गीत चाँदनी गाए।
वीर शिवाजी के किस्से अब,
मुझको रोज सुनाना।
पन्नाधाय सुनाती थी वो,
मीठी लोरी गाना।
होता सिर पे आँचल तेरा,
नींद मुझे झट आती।
तुम भी तो थक जाती होगी,
कैसे ये कर पाती ?

– भोपाल (म. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

चैत्र	२०८२	▪	वर्ष	४५
अप्रैल	२०२५	▪	अंक	१०

संरक्षक

कृष्ण कुमार अष्ठाना

संपादक

गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक

नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चैक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:

व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com

संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो!

रसायनशास्त्र पढ़ते समय प्रायः दो शब्द आपने अवश्य सुने होंगे संघटन और विघटन। संघठन अर्थात् मिलना, एकत्र होना, साथ रहना और विघटन यानी प्रथक्करण, अलगाव, बिखराव, टूटना। मैं आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि यह केवल रसायन शास्त्र सम्बन्धित क्रियाएँ नहीं हैं बल्कि एक रसायन शास्त्र जो हमारे सामाजिक जीवन में घटित होता है उस सोशल कैमेस्ट्री में भी संघटन व विघटन का गहरा प्रभाव होता है। सारा समाज जब व्यक्तिगत भिन्नताओं के बाद भी किसी सांस्कृतिक या राष्ट्रीय परिस्थिति में स्वयं को संघटित रखता है तो वह न केवल स्वयं सशक्त होता है बल्कि अपने स्वराष्ट्र को भी अटूट बनाता है, समर्थ बनाता है। इसके विपरीत यदि समाज विघटनशीलता अपनाता है तो वह क्षीण, दुर्बल और असमर्थ होकर टूटता जाता है।

समाज की यह विघटन और संघटन की प्रवृत्ति उसके कारण और समाधान की गहन जाँच पड़ताल कर उसे सुसंघटित करने के उपायों को प्रारंभ करने वाले इस युग के महान समाज संघटक हुए हैं **डॉ. केशव राव बलिराम हेडगेवार**। अँग्रेजी तिथि के अनुसार उनका जन्म १ अप्रैल १८८९ को हुआ था। उस दिन भारतीय तिथि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (वर्ष प्रतिपदा) थी। डॉ. हेडगेवार द्वारा प्रवर्तित समाज संघटन की उस अद्‌भुत प्रभावी पद्धति को ही हम आज **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ** के नाम से जानते हैं। यह संघटन अपने शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर चुका है।

ऊपर मैंने रसायन की बात की है। डॉ. हेडगेवार ने यह 'समरसता' अर्थात् भेदभाव रहित आत्मीय समानता रूपी 'रसायन' को खोजा। यहाँ एक शब्द पर और प्रकाश डालना उचित होगा। 'संघटन' को हिन्दी में 'संगठन' कहने का अभ्यास बढ़ चला है। वस्तुतः 'संघटन' एक रासायनिक परिवर्तन की भाँति स्थायी मिलन को प्रकट करता है जबकि 'संगठन' भौतिक अभिक्रियात्मक है। संस्कृत और मराठी के संघटन शब्द प्रयोग में अधिक गहराई है। तथापि शब्द कोई भी ले लें पर अपने घर, परिवार, समाज और राष्ट्र में समरस संघटन ही उसके सुख, सुरक्षा, सामर्थ्य व अखण्डता के लिए अनिवार्य है। संघटन सबल करें तो समाज सकारात्मक दिशा में सतत प्रगति करेगा। इस कार्य में हमें अपनी भूमिका सुनिश्चित कर सक्रिय होना चाहिए।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

कहानी

- सीख -रन्दी सत्यनारायण राव ११
- दा और बा -डॉ. शशि गोयल १९

छोटी कहानी

- नन्हा टॉमी -प्रगति त्रिपाठी २३
- दो बेटियों की कहानी -भगवती प्रसाद द्विवेदी ४२
- चन्दू की टाईम मशीन -रजत कुमार बनर्जी ४७

नाटक

- केशव -उमेश कुमार चौरसिया ०५

आलेख

- राष्ट्रऋषि बाबासाहब..... -निखिलेश महेश्वरी २४
- ऋषि योद्धा भगवान..... -डॉ. उमेश प्रताप 'वत्स' ३०
- पूज्य ज्योतिबा फुले -निखिलेश महेश्वरी ४५

संवाद

- मलेरिया रोग कारण..... -डॉ. मनमोहन प्रकाश श्रीवास्तव ३८

चित्रकथा

- लाल बुझक्कड़ काका..... -देवांशु वत्स २९
- मुफ्त में -संकेत गोस्वामी ४१
- कौन सा वादा ? -देवांशु वत्स ५०

कविता

- मीठी लोरी गाना -डॉ. प्रीति प्रवीण खरे ०२
- इसका भी घर होगा मेरा -दिविक रमेश १०
- मन की शक्ति -डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल' १३
- संतरा और नारंगी -शिवम् सिंह २८
- सूरज और चांद -प्रवीण कुमार जिंदल ३२
- हाथी दादा अच्छे -भाऊराव महंत ५१

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १४
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी १७
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल २६
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक ३३
- लोकमाता अहिल्याबाई होळकर -अरविन्द जवळेकर ३५
- स्वास्थ्य -डॉ. मनोहर भंडारी ३७
- छ: अँगुल मुस्कान - ४३
- मैं संघ हूँ -नारायण चौहान ४४
- पुस्तक परिचय - ४६
- आपकी पाती - ४९

संस्मरण

- बंदर की मानवता -गोविन्द शर्मा २१

बाल लेखनी

- तितली -सम्यका अग्रवाल ४८

बौद्धिक क्रीडा

- इस तरह बनाओ -संकेत गोस्वामी १८
- भूल भुलैया -चांद मोहम्मद घोसी २५
- पहेलियाँ -हरदेवसिंह धीमान ३४
- बूझो नाम करो प्रणाम - ३६
- अध्यात्म पहेली -गोस्वामी तुलसीदास ४९

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **"मन्दसौर संजीत मार्ग SSM"** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

केशव

– उमेश कुमार चौरसिया

पात्र–
केशव
तीन बालक
महादेव
कुछ सैनिक
सूत्रधार

प्रथम दृश्य

(९ से १२ वर्ष आयु के मराठी बालक चट्टानों पर बैठे आपस में चर्चा कर रहे हैं। किसी बात पर खिलखिलाकर हँस रहे हैं, तभी ९–१० वर्षीय बालक केशव आता है।)

केशव– (निकट आकर) क्या बात है मित्रो! बड़ी ठिठोली हो रही है।

पहला बालक– (हँसते हुए ही) वह तो होगी ही ना केशव.....

केशव– क्यों भई! ऐसा क्या हुआ है, जरा मैं भी तो सुनूँ.....

दूसरा बालक– सब बताते हैं, पहले तू बैठ तो।

केशव– (बैठते हुए) अब बताओ, क्या बात है?

तीसरा बालक– मैं बताता हूँ, अरे अपना वो गोपाल है ना....

केशव– हाँ है तो?

एक बालक– हाँ तो गोपाल आज तड़के ही व्यायामशाला आ गया और कहने लगा मलखम्ब पर अभ्यास करेगा...

केशव– किन्तु उसने तो कभी मलखम्ब किया ही नहीं।

दूसरा बालक– वही तो, हमने भी मना किया किन्तु वह माना ही नहीं और....

केशव– और क्या?

तीसरा बालक– (अपनी हँसी रोकते हुए) जैसे ही खम्ब पर चढ़ा, फिसलकर धड़ाम से नीचे आ गिरा। (हँसने लगता है, अन्य सब भी हँसने लगते हैं।)

केशव– किन्तु इस तरह किसी की हँसी उड़ाना तो ठीक नहीं है ना, सीखते से ही तो सीखेगा ना। मैंने भी तो धीरे–धीरे ही सीखा है।

एक बालक– तुम्हारी बात अलग है केशव, तुमने तो कुछ ही दिनों में मलखम्ब पर कई प्रकार की पकड़ें सीख ली हैं।

केशव– वह तो तुम मित्रों के संग गेंट–टप्पा खेलने और रोज पहिया लेकर मीलों दौड़ लगाने के कारण मेरी माँसपेशियाँ मजबूत हो गईं, तभी तो मलखम्ब भी सीख पाया ना? वैसे ही गोपाल भी सीख लेगा।

तीसरा बालक–सीख ही ले तो अच्छा, वरना फिर अपने हाथ–पैर तुड़वा लेगा कहीं। (कहते हुए फिर हँसने लगता है, अन्य बालक भी हँसने लगते हैं।)

केशव– अच्छा अब छोड़ो इस बात को... आज हम कुछ नया करते हैं।

दूसरा– नया! किन्तु क्या?

केशव– आज हम सब मिलकर वेदपाठ करेंगे, ठीक है ना?

पहला बालक– हाँ यह अच्छा है, (सोचते हुए) क्यों ना आज हम शांतिपाठ का अभ्यास करें।

केशव– हाँ यह ठीक रहेगा, यजुर्वेद के इस शांतिपाठ के उच्चारण से सम्पूर्ण वातावरण में शांति की स्थापना होती है, मुझे माँ ने बताया था।

तीसरा बालक– चलो पहले मैं सुनाता हूँ, (बिना रुके जल्दी–जल्दी रटते हुए बोलता है।) ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्ति पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः

....

पहला बालक– अरे रुक भाई! ये क्या रेलगाड़ी चला दी। (सभी हँसने लगते हैं।)

केशव– वेदमंत्रों का उच्चारण पूर्ण लय से मनपूर्वक, अर्थ को समझते हुए करने से ही उसका लाभ मिलता है मित्रो......

दूसरा बालक– तो तुम ही एक बार शांतिपाठ का सही उच्चारण करके बता दो ना केशव।

सभी बालक– हाँ केशव तुम ही बता दो।

केशव– ठीक है करता हूँ। (सस्वर पाठ करता है।)

ऊँ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्षं शान्ति: पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति:।

वनस्पतय: शान्तिर्विश्वेदेवा: शान्तिब्रह्म शान्ति: सर्वं शान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सा मा शान्तिरेधि।।

ऊँ शान्ति: शान्ति: शान्ति:।।

(सारे बच्चे प्रसन्न होकर तालियाँ बजाते हैं।)

तीसरा बालक– वाह केशव! जब तुम वेदपाठ करते हो तो ऐसा प्रतीत होता है मानो कोई सिद्धपुरुष पाठ कर रहा हो।

पहला बालक– सभी जन ऐसा वेदपाठ रोज करने लगें तो अपने देश का कल्याण ही हो जाए।

केशव– (अचानक गंभीर हो जाता है।) अपने देश का कल्याण तो तभी होगा जब हम स्वतंत्र होंगे।

दूसरा बालक– इसका क्या अर्थ?

केशव– मैंने 'केसरी' में पढ़ा है, अभी अँग्रेजों ने हमारे राष्ट्र को पराधीन बना रखा है। यह हमारे नागपुर में जो भोंसलों का राज्य है ना, जिन्हें सभी महाराज सरकार कहते हैं वे भी गुलाम ही हैं।

तीसरा बालक– ओह! पर इसमें हम बालक कर ही क्या सकते हैं?

केशव– कर सकते हैं, (उठकर दृढ़ स्वर में) केसरी समाचार–पत्र में ही मैंने पढ़ा है कि कई तरुण क्रांतिकारी अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं, हमें राजाओं की तरह गुलाम नहीं बल्कि मुगलों से मुकाबला करने वाले छत्रपति शिवाजी की तरह निडर और वीर बनना होगा।

द्वितीय दृश्य

(केशव मार्ग में अपने मित्रों के साथ घर की ओर जा रहा है। मार्ग में बड़ी सजावट दिख रही है, कहीं तुरही–नगाड़ों के स्वर भी सुनाई दे रहे हैं।)

पहला बालक– क्या बात है केशव! आज इतनी सजावट किस लिए?

(केशव के बोलने से पहले ही तीसरा बालक बोल पड़ता है।)

तीसरा बालक– मुझे पता है, महारानी विक्टोरिया का जन्मदिन है आज।

केशव– (चिढ़ते हुए) तो कहाँ की महारानी हैं ये?

तीसरा बालक– (सोचते हुए) वो मुझे नहीं पता। वहाँ सब लोग कह रहे थे इसलिए मुझे ज्ञात हुआ, बस।

केशव– वही तो, हमें पूरी जानकारी तो है नहीं, बस चले हैं जन्मदिन मनाने।

दूसरा बालक– तो तुम ही बता दो ना केशव।

पहला बालक– बताएगा तो तब ना जब इसे ही पता होगा।

केशव– पता है मुझे।

तीसरा बालक– तो बता फिर?

केशव– ये किसी दूसरे देश इंग्लैड की महारानी है, हमारे देश की नहीं।

दूसरा बालक– तो फिर हमारे यहाँ उसके जन्मदिन का इतना हल्ला क्यों हो रहा है?

केशव– इसलिए क्योंकि हमारे नागपुर के राजा भी उनके गुलाम हैं। सभी पराधीन राज्यों को विदेशी महारानी का साठवाँ जन्मदिन जबरदस्ती मनाना पड़ रहा है।

(केशव कुछ और कहता इससे पहले ही एक ओर से कुछ लोग टोकरे लिए हुए आते हैं और सब बच्चों को मिठाई के दोने बाँटते हुए चले जाते हैं, सभी बच्चे मिठाई पाकर खुश होते हैं, मिलकर खाने लगते हैं। किन्तु केशव विचलित होता हुआ आगे चला जाता है।)

तृतीय दृश्य

(केशव अपने घर आता है और मिठाई का दौना वहाँ रखे कूड़ेदान में फेंक देता है। पास ही खड़े केशव के बड़े भाई महादेव शास्त्री उसे देख लेते हैं।)

महादेव– क्या बात है केशव, मिठाई को कूड़ेदान में क्यों फेंक दिया?

केशव– फेंक दी बस।

महादेव– (पास आकर) अरे इतना क्रोध किसलिए केशव?

केशव– तो क्या करूँ दादा! अपने राज्य को पराधीन बनाने वाली महारानी के जन्मदिन की मिठाई क्यों खाऊँ मैं।

महादेव– किन्तु अन्य लोग तो बहुत प्रसन्न हैं।

केशव– इसी बात पर तो मुझे आश्चर्य भी होता है दादा! हमारे राजाओं को जीतकर अपना राज जमाने वाले अँग्रेजों के समारोह में कैसा आनन्द? यह तो हमारे लिए लज्जा का विषय है, मुझे नहीं खानी ऐसी मिठाई।

महादेव– बात तो तुम्हारी उचित है किन्तु हमारे वश में है ही क्या?

केशव– है दादा! हम सब चाहें तो कुछ कर सकते हैं। मेरा तो मन करता है कि उनका झण्डा हटाकर सीताबरडी के किले पर अपना भगवा झण्डा फहरा दूँ।

चतुर्थ दृश्य

(केशव अपने मित्रों के साथ मार्ग में जा रहा है। मार्ग में एक बैनर देखकर केशव रुक जाता है।)

पहला बालक– क्या हुआ केशव! रुक क्यों गए?

केशव– (बैनर को देखते हुए) यह किसका पोस्टर लगा है?

दूसरा बालक– लिखा तो है नाटक का।

केशव– सो तो समझा पर नाटक का नाम कितना अजीब-सा है ना।

तीसरा बालक– क्यों सही तो है, क्या अजीब है इसमें?

केशव– है ना, यहाँ लिखा है **विक्रम श शिकला**।

दूसरा बालक– तो सही है ना।

केशव– होगा सही पर बहुत अजीब बात है, विक्रम ने केवल श अक्षर सीखा, बस इसी पर पूरा नाटक।

पहला बालक– यह कहाँ पढ़ लिया केशव?

केशव– अरे! यहीं तो लिखा है ना मराठी में... **विक्रम श शिकला**... इसका हिन्दी अर्थ तो यही हुआ ना कि विक्रम ने श सीखा, मुझे तो मराठी की कई किताबें पढ़नी आती हैं तो एक अक्षर सीखने पर कैसा नाटक (यह सुनते ही सभी हँसने लगते हैं।) क्यों क्या हुआ, तुम हँसने क्यों लगे?

तीसरा बालक– अरे केशव! तुमने पढ़ते समय शब्द को तोड़ दिया है। श अक्षर को साथ में जोड़कर पढ़ो, लिखा है नाटक **विक्रम शशिकला**। (सभी बालकों के साथ अब केशव भी हँस पड़ता है।)

केशव– अरे हाँ! आज तो मैं भी बुद्धू ही बन गया। सही कहते हैं कि एक अक्षर भी ठीक से उच्चारित ना हो तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

पहला बालक– और नहीं तो क्या... (सभी हँसते हुए आगे बढ़ जाते हैं।)

दूसरा बालक– चलो हम कोई खेल खेलते हैं।

सभी– हाँ हाँ चलो चलो।

तीसरा बालक– पर खेलें क्या?

दूसरा बालक– यह निश्चित करना भी रोज की एक बड़ी समस्या है कि क्या खेलें (सभी सोचने लगते हैं।)

पहला बालक– तुम कोई नया खेल सुझाओ ना केशव।

केशव– (कुछ सोचकर) आज हम ध्वज विजय का खेल खेलते हैं।

दूसरा बालक– अरे वाह! नाम तो बड़ा अच्छा लग रहा है।

पहला बालक– पर ये है क्या, करना क्या है इसमें?

केशव– नाम तो मुझे भी अभी ही सूझा है, बड़ा आसान खेल है, हम दो दल बनाएँगे और दोनों के किले आमने–सामने होंगे।

तीसरा बालक– अच्छा फिर?

केशव– फिर होगा संघर्ष अपना–अपना ध्वज दूसरे के किले पर फहराने का।

दूसरा बालक– बड़ा मजेदार खेल है यह तो।

पहला बालक– पर ध्वज किसका बनाएँगे?

केशव– ये जो मेरा कमरबंद है ना (अपना केसरिया कमरबंद खोलता है।) इसे किसी भी लकड़ी पर बाँधकर एक ध्वज बनाएँगे और वह तुम्हारा अंगोछा है ना उसका बनाएँगे दूसरा ध्वज।

पहला बालक– पर कौन–सा ध्वज किसका होगा? दलों के नाम क्या रखेंगे?

केशव– केसरिया ध्वज वाला दल होगा मराठा और दूसरा दल होगा मुगल।

तीसरा बालक– चलो फिर दल बनाकर शुरू करते हैं।

केशव– पर मेरा दल तो मराठा ही होगा। (कहते हुए केशव पहले बालक को लेकर अपना दल

बनाकर अपना झण्डा लेकर खड़ा हो जाता है और अन्य दूसरा व तीसरा बालक दूसरा झण्डा लेकर सामने खड़े हो जाते हैं।)

केशव– जय शिवा सरदार की।

दूसरा बालक– जय हो सुलतान की।

(नारे लगाते हुए दोनों दलों में संघर्ष आरंभ हो जाता है। दोनों ही झण्डा लेकर दूसरे दल के किले पर जाने का प्रयत्न करते हैं। कोई एक आगे निकलता है तो दूसरे दल के लोग उसे फिर से पकड़ लेते हैं। कुछ देर संघर्ष के उपरान्त केशव जोर से 'जय शिवा सरदार की' बोलते हुए दूसरे दल के बालकों को धक्का देकर उनके झण्डे को फेंक देता है। और दूसरे किले पर जाकर अपना केसरिया झण्डा लगा देता है। नारा लगाते हैं– 'जय शिवा सरदार की'।)

केशव– देखा ना! जीत तो मराठा की ही हुई आखिर।

तीसरा बालक– हाँ भाई! तुम्हारी ताकत के आगे टिक ही नहीं सके हम तो।

दूसरा बालक– पर हारकर भी हम प्रसन्न हैं

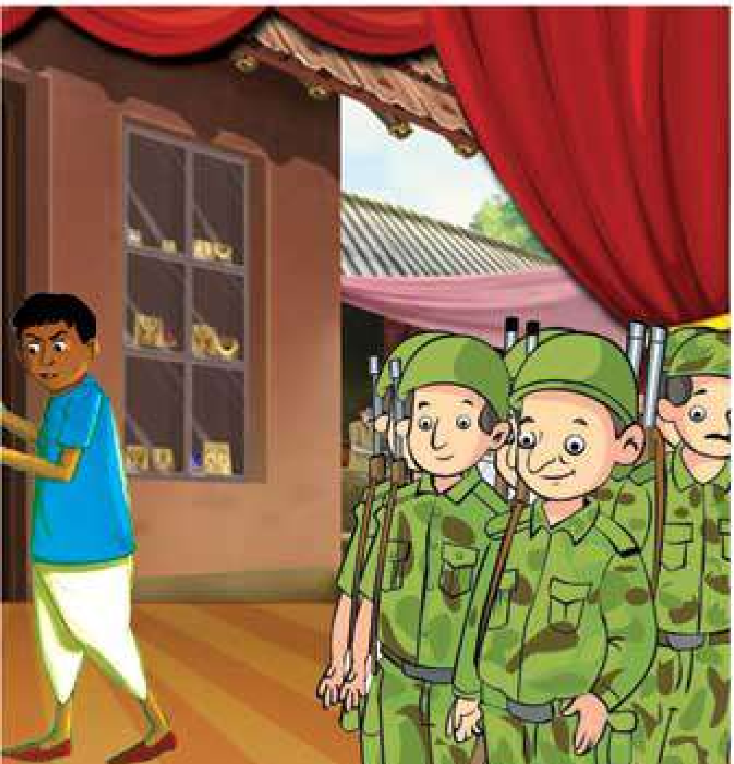

क्योंकि जीत तो.....

सभी– मराठा की ही हुई है।

केशव– इसी प्रकार चाहे ये अँग्रेज कितने भी अत्याचार कर लें, देख लेना आखिर में जीत तो हम मराठा की ही होगी।

(अब केशव तुरन्त ही कुछ सरकण्डे से इकट्ठा करके सामने जमीन पर अलग–अलग लगा देता है और सभी बालकों को भी हाथ में एक–एक लकड़ी दे देता है।)

केशव– देखो मित्रो! ये जो हमारे सामने सरकण्डों से खड़े हैं ना ये ही हैं आततायी अँग्रेज, आओ हम इनको अपनी तलवारों से मार गिराते हैं। (नारा लगाता है) 'जय शिवा सरदार की'

(सभी बालक 'जय शिवा सरदार की' नारा लगाते हुए अपने हाथ में पकड़ी लकड़ियों को तलवार के समान घुमाते हुए सरकण्डों को मार गिराते हैं, फिर जोश में एक साथ नारा लगाते हैं– 'जय शिवा सरदार की'।)

केशव– देखा ना मित्रो! इसी प्रकार हम इन अँग्रेजों को अपनी मातृभूमि मार भगाएँगे और स्वतंत्र कराएँगे।

सभी– हाँ हम सब मिलकर अँग्रेजों को मार भगाएँगे।

केशव– वन्दे मातरम्।

(तभी एक ओर से सूत्रधार का प्रवेश।)

सूत्रधार– अपनी मातृभूमि के प्रति पूर्ण समर्पित बालक केशव ही आगे चलकर बना डॉ. केशव राव बलिराम हेडगेवार, जिन्होंने राष्ट्रभक्ति भाव से परिपूर्ण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की।

डॉ. हेडगेवार ने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत की स्वाधीनता, भारतीय संस्कृति–संस्कार और जीवन मूल्य, समाज और राष्ट्र की सेव में अर्पित कर दिया। इनका जीवन और संदेश आज भी हमें प्रेरणा देता है।

– अजमेर (राजस्थान)

कविता

इसका भी घर होगा मेरा

– दिविश रमेश

एक नया पौधा आया है,
गमले में सज मेरे घर पर।
लगा सोचने, सोच रहे क्या,
पहले के पौधे जो घर पर।।

शायद पूछ रहे हो उत्सुक,
'कहो कहाँ से आए हो तुम ?
आओ दोस्ती कर लें हम भी,
रहें साथ में खिल–खिल हम–तुम।।

सुनकर कितना खुश होगा यह,
नया–नया पौधा जी मेरा।
याद सताएगी ना घर की,
इसका भी घर होगा मेरा।।

मेरी अम्मा, छुटकू, छुटकी,
इसको भी तो प्यार करेंगे।
जैसे रखते सब पौधों का,
पापा इसका ध्यान रखेंगे।।

दादा–दादी कहीं समझ कर,
इसको भी बच्चा अपना ही।
कहीं सुनाने बैठ न जाएँ,
सारा किस्सा बस अपना ही।।

– नोएडा (उ. प्र.)

सीख

– रन्दी सत्यनारायण राव

चंपक वन में, चुलबुल बंदर का पढ़ाई और खेल में, कोई जोड़ नहीं था। माता–पिता की अकेली संतान होने के कारण उसे लाड़–प्यार खूब मिलता, जिसके कारण वह थोड़ी शरारत भी करने लगता था। चंपक वन के सभी जानवर एक ओर जहाँ उससे प्यार करते थे, वहीं उन्हें यह डर भी सताता रहता था कि पता नहीं, यह कब कौन–सी शैतानी कर बैठे ?

उसके अध्यापक गबरू बाघ, को जहाँ यह छात्र बड़ा प्यारा लगता था, तो दूसरी ओर उसकी शैतानी के डर से सहमे–सहमे से रहते थे। शाला की कक्षा में, चुलबुल के चार और मित्र थे, जो खेल और पढ़ाई में, उसके साथ रहते थे।

चुलबुल ऐसा कोई अवसर हाथ से न जाने देता था, जिससे उसकी बहादुरी का सब लोहा मानें। पिंकी भालू, टिंकू खरगोश, झबरा पिल्ला और लम्बू जिराफ उसके मित्र थे।

एक दिन सब पिकनिक मनाने चल पड़े। सभी ने अपने–अपने घर से भोजन बाँध लिया था। जिसे आपस में बाँट कर खाया। फिर सभी ने तय किया कि शहर में जाकर सिनेमा देख आया जाए। शहर में एक स्थान पर सबकी दृष्टि ठहर गई। वह सिनेमा घर था। अब सिनेमा देखने का निर्णय लिया गया।

सिनेमा देखने के बाद सब मित्र जंगल, अपने घर को चल पड़े। रास्ते में पिंकी भालू ने कहा– ''क्या करतब था भाई! काश मैं भी वैसा कर पाता।'' उसकी बात पर हाँ में हाँ मिलाते हुए टिंकू खरगोश ने कहा– ''वैसा करतब तो मैं भी कर सकता हूँ, पर उतने ऊपर से छलांग मेरे वश की नहीं लगती।'' झबरे ने ठण्डी सांस लेकर कहा– ''मैं तो इतनी छोटी नाली भी लांघ नहीं सकता, पता नहीं, सिनेमा का हीरो इतनी ऊँची इमारतें और नाले कैसे इतनी आसानी से पार कर रहा था। अवश्य, उसके पंख लगे होंगे, काश मैं भी ऐसा उड़ सकता।''

लम्बू जिराफ ने कहा– ''ऐसे मेरे भी पर लग जाते तो शिकारियों से जान बच जाती। चुलबुल को चुप देखकर, साथियों ने पूछा– ''क्या बात है भाई! बड़े चुप हो ? सिनेमा का असर तुम पर नहीं दिख रहा। लगता है भाई! तुम तो पढ़ाई में उस्ताद और फुटबॉल–क्रिकेट में चैम्पियन हो। क्या तुम कर सकते हो, जैसे सिनेमा के हीरो ने किया है ?

चुलबुल ने उत्तर नहीं दिया। उसे रात भर नींद नहीं आई। उसके मित्रों की बात उसे लग गई। सुबह विशाल बरगद के पेड़ के नीचे शाला में, वह नहीं पहुँचा। अध्यापक गबरू बाघ ने उसके साथियों को बुलाकर चुलबुल के शाला न आने का कारण पूछा। उन्होंने कहा– ''हमें नहीं ज्ञात।'' फिर उनमें से एक लम्बू जिराफ ने अपने अध्यापक से कह ही दिया– ''कल हम सब शहर में सिनेमा देखने गए थे। कल चुलबुल ने हमारी किसी भी बात का उत्तर नहीं दिया। बस, घर लौट गया।''

अब गबरू अध्यापक को चुलबुल के ऊपर किसी खतरे की गंध आने लगी तो, उन्होंने उसके साथियों को चुलबुल की खोज–खबर लेने उसके घर भेज दिया।

चुलबुल के साथियों को, अपने पास आते देख चुलबुल की माताजी ने पूछा– ''क्या बात है बच्चो? बहुत उदास दिख रहे हो, क्या बात है?''

टिंकू खरगोश ने आगे आकर कहा– ''हमें अध्यापक जी ने यह बता करने के लिए भेजा है कि आज चुलबुल शाला क्यों नहीं आया?''

यह सुन चुलबुल की माताजी को भी किसी अनहोनी का आभास हुआ। वह चकित होकर बोली– ''अरे! चुलबुल तो शाला का कहकर ही घर से निकला था। चलो कहीं कोई मुसीबत में न पड़ गया हो।''

सब शाला की ओर चल पड़े वहाँ पहुँच कर कहीं पता नहीं था। एकाएक अकड़ू जिराफ को ऊपर कहीं हलचल दिखी। वह पेड़ों के झुरमुट की ओर देखने लगा। अचानक एक पेड़ की ऊँचाई से दूसरे पेड़ तक छलाँग लगाते, उसे चुलबुल दिख गया। वह चीखने लगा– ''मिल गया, मिल गया, चुलबुल मिल गया।''

सब उसकी ओर देखने लगे वह बिना रुके पेड़ों के झुरमुट की ओर भागने लगा। सब जानवर तथा चुलबुल की माता भी उसके पीछे भागने लगी। अकड़ू की तरह सब ऊपर देखने लगे। वहाँ चुलबुल, सिनेमा के हीरो जैसा एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक उछलकर करतब दिखा रहा था। कुछ जानवर तालियाँ बजाकर उसका साहस बढ़ा रहे थे।

लेकिन अध्यापक गबरू बाघ ने चीघते हुए उसे सावधान किया– ''चुलबुल! ऐसा काम मत करो, तुरंत नीचे आओ। यह सब नाटक में चलता है, वास्तविकता में नहीं। तुम्हारी तरह मैंने भी 'डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ.' देखकर ऐसा करने का प्रयत्न किया था। पर इससे मेरी ही कमर टूट गई। इसलिए कहता हूँ बंद करो यह सब।''

चुलबुल की माता जी का डर के मारे बुरा हाल था। अपने नीचे हो रहे शोर से अचानक चुलबुल का ध्यान हट गया, अब की छलांग वह चूक गया और पेड़ से टकराते हुए नीचे जमीन पर धम्म से आ गिरा और फिर उसको होश नहीं रहा।

उसे चंपक वन के अस्पताल ले जाया गया तो ज्ञात हुआ कि उसकी रीढ़ की हड्डी और दाहिना पैर टूट चुका है। सूचना मिलते ही चंपक वन शोक में डूब गया। अब क्या कभी चुलबुल दौड़–कूद नहीं सकेगा? इस सूचना से चुलबुल की टीम में निराशा छा गई। उसकी गंभीर स्थिति को देखकर सबसे अच्छे सर्जन डॉक्टर गुरिल्ला को सुंदर वन से बुलाया गया। उनके द्वारा कई महीनों उपचार के बाद चुलबुल बिल्कुल ठीक हो गया।

डॉक्टर गुरिल्ला ने चुलबुल से पूछा– ''चुलबुल बेटा! क्या अब भी सिनेमा का हीरो बनना चाहोगे? तुम्हें पता है, चंपक वन ने तुमसे कितनी आशाएँ बना रखी है। क्या तुम्हें इसकी जानकारी है कि इसके प्रत्येक निवासी ने अपनी कमाई का कुछ पैसा तुम्हारे उपचार के लिए दिया है? तुम्हारे माता–पिता ने अपना घर तक गिरवी रख दिया और तुम्हारे अध्यापक ने अपना एक महीने का वेतन तुम्हारे

उपचार के लिए दिया। यह केवल इसलिए नहीं कि तुम स्वस्थ होकर फिर शैतानी करोगे। बल्कि इसलिए किया कि तुम चंपक वन की शान हो। तुमने पहले अपने काम से इसका मान बढ़ाया और आगे भी चंपक वन को यह विश्वास है कि उसका झण्डा ऊँचा रखोगे, अब और कोई शैतानी नहीं करोगे।''

चुलबुल की आँखों में प्रायश्चित के आँसू छलक आए। उसने डॉक्टर गुरिल्ला के पैर छूकर कहा– ''आपके स्नेह और प्यार के बिना मैं ठीक नहीं हो सकता था। काका! मैं वचन देता हूँ कि अब से कभी भी मेरे काम से कोई आहत नहीं होगा।''

चंपक वन में, इस बात का समाचार फैल गया कि चुलबुल चंगा हो गया है। गबरू अध्यापक ने सुना तो जैसे उनके प्राण ही लौट आये उन्होंने चुलबुल के घर पहुँचकर उसे गले लगा लिया और बोले– ''देखा बेटा! तुम्हारी एक शरारत के कारण हम सब कितने परेशान हुए। सिनेमा से अच्छी बात सीखनी चाहिए, किन्तु उसकी अंधी नकल नहीं। फिर उसमें यह भी लिखा दिखाया जाता है कि सिनेमा में दिखाए गए करतब, अपने घर पर जाकर न करें। शायद तुम्हारा ध्यान उस पर न गया हो।''

चुलबुल बड़े ध्यान से अच्छे बच्चे की तरह उनकी सब बातें सुनता रहा।

– जमशेदपुर (झारखण्ड)

कविता

मन की शक्ति

– डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'
चम्पावत (उत्तराखण्ड)

कुछ भी नहीं समझ में आती
हमको मन की बात,
दूर-दूर तक जाता है यह
दिन हो चाहे रात।

पहचानें हम बड़े गौर से
मन की अद्भुत शक्ति,
मन से ही श्रेष्ठ धरा पर
सब जीवों से व्यक्ति।

जीवन में सुख-दुख का बनता
मन ही कारण मूल,
यही याद सबकी रखता है
कुछ को जाता भूल।

मन ही तो देता है हमको
हर प्रकार का ज्ञान,
जिसने मन मजबूत कर लिया
वह बन सका महान।

कोई बात नहीं होती है
जब मन के अनुकूल,
देने लग जाता यह उसको
क्षणभर में ही तूल।

कभी नहीं हमको करना है
अपना मन कमजोर,
पकड़े रहें हमेशा कसके
हम इस मन की डोर।

उठते रहते कई किस्म के
मन में सोच-विचार,
यदि मन जीता, जीत समझ लो
मन के हारे हार।

अच्छे-अच्छे कर्मों में मन
देता जाए ध्यान,
तब रह पाएगी होठों पर
नित मीठी मुसकान।

भाषा और शैली की जादूगरनी : अलका पाठक

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

अलका पाठक

अलका पाठक हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं की कुशल लेखिका थीं। बाल साहित्य के क्षेत्र में तो वे भाषा और शैली की जादूगरनी थीं। बच्चों के लिए लिखी उनकी कहानियाँ बाल साहित्य की अनुपम धरोहर हैं। उन्होंने ऐसी कहानियाँ लिखीं कि बच्चे क्या, बड़े भी उन्हें एक ही बैठक में पढ़ने को विवश हो जाते हैं। चित्रोपम शैली ऐसी कि पाठक सम्मोहित हो उठता है। भाषा ऐसी कि लगता है कि कहानी पढ़ नहीं रहे बल्कि उसे सामने देख रहे हों। यही सब विशेषताएँ अलका जी को बाल साहित्य के अन्य सर्जकों में अद्वितीय और अनुपम सिद्ध करती हैं।

अलका पाठक जी का जन्म ३ सितम्बर १९५२ को उत्तर प्रदेश के हाथरस में श्रीमती दया और रामेश्वर उपाध्याय की संतान के रूप में हुआ था। बाल्यावस्था से ही संस्कार तो जैसे उन्हें घुट्टी में प्राप्त हुए। वे आचार्य श्रीराम शर्मा की नातिन थीं। पिताजी रामेश्वर उपाध्याय जी विधि विशेषज्ञ और साहित्यिक अभिरुचि के व्यक्ति थे। वे 'दिल्ली', 'आजकल', 'योजना', जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं के सम्पादक रहे।

अलका जी के मन में बचपन से ही संस्कार और साहित्यिक अनुराग का ऐसा अंकुर प्रस्फुटित हुआ जो जीवन पर्यंत उनकी सर्जना का हेतु बना रहा। अलका जी विज्ञान की छात्रा थीं। उन्होंने रसायन शास्त्र विषय में एम. एस–सी किया था। उन्होंने साहित्य को तर्क की कसौटी पर रखा और एक तरह से पाठकों के समक्ष जीवन का नवनीत परोसा। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण अत्यंत सकारात्मक था। वे प्रतिकूलताओं में भी हार न मानते हुए जीवन के एक–एक पल को हँसते चहकते हुए जीने वाली विदुषी थीं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, व्यंग्य, जीवनी, अनुवाद और काव्य विधाओं में उत्कृष्ट लेखन किया।

उपन्यास और कहानी विधा में श्रेष्ठ लेखन कर उन्होंने बाल साहित्य को समृद्ध किया। बच्चो के लिए लिखीं उनकी सभी पुस्तकें चर्चित हुईं। उनकी बाल पुस्तकें हैं– नटखट बाबू, पार्क में सैर, तुम्हारा गिरिराज, परी राक्षस और बच्चा, इंसान का बेटा, आँसू पछाड़।

जीविका के लिए उन्होंने आकाशवाणी को चुना। रोहतक, मथुरा, लखनऊ और नई दिल्ली केन्द्रों में अपनी उदाहरणीय सेवाओं के माध्यम से उन्होंने समाज में अद्भुत लोकप्रियता प्राप्त की। हिंदी के वरेण्य साहित्यकारों के प्रति उनके मन में अगाध श्रद्धा थी। नए लेखकों से भी उनके आत्मीय संबंध थे। आकाशवाणी के माध्यम से साहित्यिक संरक्षण और प्रशिक्षण के लिए उनका उल्लेखनीय योगदान अनुकरणीय है।

३१ अक्टूबर २०१९ को नई दिल्ली में उनका

आकस्मिक निधन हो गया।

आइए, पढ़ते हैं उनकी एक अनूठी कहानी जिसे पढ़ते हुए आपको लगेगा कि यह कहानी पढ़ नहीं रहे, बल्कि देख रहे हैं। सब कुछ घटित हो रहा है आपके समक्ष। प्रत्यक्ष। यही उनकी लेखनी की अद्वितीय विशेषता है, जिसके लिए बाल साहित्य संसार में सदैव उन्हें सम्मान के साथ स्मरण दिया जाएगा।

तितली और बाबू

बाबू है एक लड़का। छोटा-सा, सुन्दर-सा, होशियार। लेकिन थोड़ा-स नटखट। बाबू है तीसरी कक्षा में। इस बार दिल लगाकर पढ़ा। मेहनत की। प्रयत्न किया। नम्बर आए, पूरे बटा पूरे। बाबू खुश। बाबू की अध्यापक भी खुश। माँ खुश। पिताजी खुश। नानी खुश। नाना खुश।

खुश होते हैं तो करते हैं क्या ? खेलते हैं कूदते हैं, नाचते-गाते हैं। मित्रों के साथ नाचते-गाते हैं। मजे उड़ाते हैं। बाबू ने भी यही किया। रिपोर्ट कार्ड दिखाया, शाबाशी मिली। प्यार मिला। दुलार मिला। पुरस्कार का वादा मिला, बाबू खुश। कूदकर बरामदे की सीढ़ियाँ उतरा, फाटक और बरामदे के बीच छोटा-सा बागीचा है- बागीचे में घास है, क्यारियाँ हैं, फूल हैं पौधे हैं, बेल हैं, पेड़ हैं, बीच में सीमेंट का बना रास्ता है, रास्ते के दोनों ओर गमलों की कतार है। गमलों में रंग-रंग के फूलों की बहार है। फूलों ने देखा, पत्तियों ने देखा, पेड़ पर बैठी चिड़िया ने देखा, कोटर में बैठे तोते ने देखा और घोंसले में बैठे-बैठे चिड़िया के नन्हें-मुन्नों ने उचक-उचककर देखा।

देखा कि श्रीमान बाबू अपने खुड्डे दाँतों को चमकाते हुए, हँसते हुए चले आ रहे हैं। भाई जिसके पूरे बटा पूरे नम्बर आएँगे वह तो हँसेगा, खिल-खिलाएगा। यदि फूलों के, पत्तियों के, पंखुड़ियों के,

घास और बेल के, लता और पत्तों के, पेड़ के, गमलों के दाँत होते, अधर होते तो वह हँसते। खूब-खूब हँसते, बाबू उनका मित्र जो ठहरा।

पर उनके न दाँत, न अधर फिर कैसे हँसे-मुस्कराएँ, खिलखिलाएँ- बस फूल हिले-पत्तियाँ डोलीं। पेड़ों की शाखों ने हिल-हिलकर बाबू को शाबाशी देनी चाही पर बाबू की समझ में ही नहीं आया। उसने एक गुलाब को पकड़कर उसको उमेठा और झट से तोड़ लिया।

गुलाब का फूल कराह उठा। बाबू को सुनाई नहीं दिया। उसने गुलाब का लाल रंग देखा, खुशबू को सूँघा और अभी सूँघ ही रहा था कि क्या देखता है कि दो तितलियाँ एक गुलाबी और एक सतरंगी बागीचे के कोने में क्यारियों के फूलों पर सैर कर रही हैं- इधर से उधर, उधर से इधर।

बाबू उन्हें पकड़ने को झपटा। लगभग दौड़ा। तितली तक पहुँचा। रास्ते में फूल हाथ से गिरा। फूल की सुध ही कहाँ थी। आँख तितली पर जो लगी थी। जब तक तितली के पास पहुँचा, तितली उड़कर दूसरी ओर। तितली की इतनी हिमाकत कि बाबू से बचे। बाबू की पकड़ से गणित के प्रश्न नहीं बचे। तितली समझती है कि बाबू से बच जाएगी। बाबू कितना होशियार है। और माँ का कहना है कि प्रयत्न करने से सब कुछ हो सकता है। एक बार का प्रयत्न नहीं लगातार प्रयत्न करने से सब कुछ हो सकता है। एक बार का प्रयत्न नहीं लगातार प्रयत्न और परिश्रम से ही पूरे बटा पूरे नम्बर लाया है, प्रयत्न और परिश्रम से सब कुछ हो सकता है।

बात सच है। सच निकली। तितलियाँ बाबू से आँख-मिचौली खेलीं। सारे बागीचे में डोलीं- बाबू को भी कभी दौड़ाया थकाया। छकाया और पिदाया। पिदाया मायने कि हारने वाले को खूब दौड़ाना। जान-बूझकर बाबू ने हिम्मत नहीं छोड़ी। पक्का इरादा। तितली यदि पकड़नी है तो पकड़नी ही है। बीच में छोड़ना नहीं। तितली से मुँह मोड़ना नहीं। तितली बहुत अकड़ी अन्त में गई पकड़ी। गुलाबी तो उड़ गई थी। हाथ आई सतरंगी। इन्द्रधनुष के सातों रंग ऊपर छिटके हुए। रंग-रंग की धारियाँ। धारियों की कतार पर नन्हीं-नन्हीं बुंदकियाँ। रंग-रंग की। प्यारे रंग। निराले रंग-निखरे-निखरे। चमके-चमके। दमके-दमके। बाबू भागा कितना दौड़ा, कितना कितनी देर, तब गई तितली पकड़ी। बाबू की अँगुलियों में तितली कसमसाई, छटपटाई, घबराई। फूल नहीं बोलते, पौधे नहीं बोलते घास और पेड़ भी नहीं। बेचारा वह गुलाब भी नहीं जिसको बाबू ने पौधे से तोड़ा था। तितली के चक्कर में पैरों से रौंदा था वह चिल्लाया, रोया बाबू ने सुना नहीं। तितली रोई चिल्लाई, कसमसाई, घबराई। बाबू ने सुना नहीं, तितली भी बोलती नहीं, बाबू नो तितली को किताब में बंद किया। किताब बस्ते में, बस्ता बन्द।

बाबू ने शाला में अपने मित्रतों को बताया। कैसी सुन्दर तितली पकड़ी, कितनी मेहनत से। बस्ता खोला। किताब बस्ते से निकाली। किताब खुली। तितली न हिली न डुली। उड़ी नहीं। वैसी ही पड़ी रही। चुपचाप। पंख सुंदर, पर उड़ते में जितनी सुंदर लगती थी वैसी अब नहीं लगी, बस ऐसी जैसे कोई चित्र हो, मित्रों ने कहा 'मर गई'।

अच्छा, किताब में मर गई होगी। घर जाकर बागीचे में उसी क्यारी में रख देगा तो जी उठेगी। बाबू ने तितली को सहेजा। जतन से रखा। घर लाया। शाला से लौटा। बरामदे में बस्ता रखा। किताब निकाली। तितली को उठाया। क्यारी तक लाकर घास पर रखा। तितली वैसी ही पड़ी रही। हिली नहीं, डुली नहीं। मर गई थी। जब तक बाबू ने पकड़ी थी तब तक उड़ती थी। डाल-डाल डोलती थी। फूल-फूल घूमती थी। खेलती थी। बाबू के संग पकड़ा-पकड़ी। आँख मिचौली। तितली बेजान, बाबू उदास, गुलाब नाराज। कल तोड़ा था एक सुन्दर फूल। पैरों तले रौंदा

था। घास रूठी थी। उस पर जूते पहने कूदा था। चिड़िया नाराज। गमलों के पौधे नाराज। पौधों के फूल नाराज। कोटर में बैठा तोता बोला– टें टें टें, घोंसलों में बैठे चिड़िया के नन्हें–नन्हें बच्चों ने उचक–उचककर बाबू को देखा बोले– चें चें चें। पेड़ नहीं बोले। पेड़ों की डालियाँ नहीं बोलीं। घास और पत्तियाँ नहीं बोलीं क्योंकि वह बोल नहीं सकते–बोलते नहीं। तोते और चिड़िया, चिड़ियों के बच्चे बोलते हैं टें टें टें, चीं चीं, चींचीं चें चें चें। वही बोलते, वही बोले। अगर हमारी तरह बोल सकते तो बोलते, शेम! शेम!! बाबू से कुट्टी। बाबू से कुट्टी तितली की। गुलाब की। फूल की। पौधे की। घास की, पेड़ की।

जब बाबू के पूरे बटा पूरे नम्बर आए तब सब कितने खुश थे। बाबू के दोस्त थे। बाबू से आज नाराज हैं; कुट्टी किए बैठे हैं।

फूल–पौधे, घास–पत्ते, बेल और पेड़ों की तितली, की कुट्टी बाबू से हुई। तुमसे तो नहीं है? अच्छे बच्चों से किसी की कुट्टी नहीं होती। तुम भी तो अच्छे बच्चे हो। हो न?

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

श्रीकृष्ण की अग्रपूजा

– मोहनलाल जोशी

युधिष्ठिर जी राजसूय यज्ञ कर रहे थे। अनेक राजर्षि और ब्रह्मर्षि उपस्थित थे। पितामह भीष्मजी ने युधिष्ठिर को कहा– ''पुत्र! तुम यहाँ पधारे हुए राजाओं का सत्कार करो।''

युधिष्ठिर ने पूछा– ''पितामह! यहाँ पधारे हुए सभी राजा एक से बढ़कर एक हैं। मैं सर्वप्रथम किसकी पूजा करूँ?''

पितामह ने कहा– ''यहाँ सबसे वीर और प्रतापी श्रीकृष्ण हैं।''

युधिष्ठिर ने पितामह भीष्म की बात मान ली। उन्होंने श्रीकृष्ण को अर्घ्य तथा पाद्य प्रदान किया। श्रीकृष्ण ने उसे विधिवत् ग्रहण किया।

यज्ञ में अनेक भूपाल बैठे थे। वे बड़े पराक्रमी थे। उनमें से शिशुपाल नामक राजा बोला– ''युधिष्ठिर! तुमने एक ग्वाले की अग्रपूजा की। हमारा सभी का अपमान किया। यह तो जरासंध से सत्रह बार हारा था। उसके भय से द्वारिका में छिप गया। यह राजा भी नहीं है। हमको यज्ञ में निमंत्रण दिया। हमारा सम्मान नहीं करते हो। हम यज्ञ से चले जाएंगे।''

– बाड़मेर (राजस्थान)

इस तरह बनाओ

भैंस

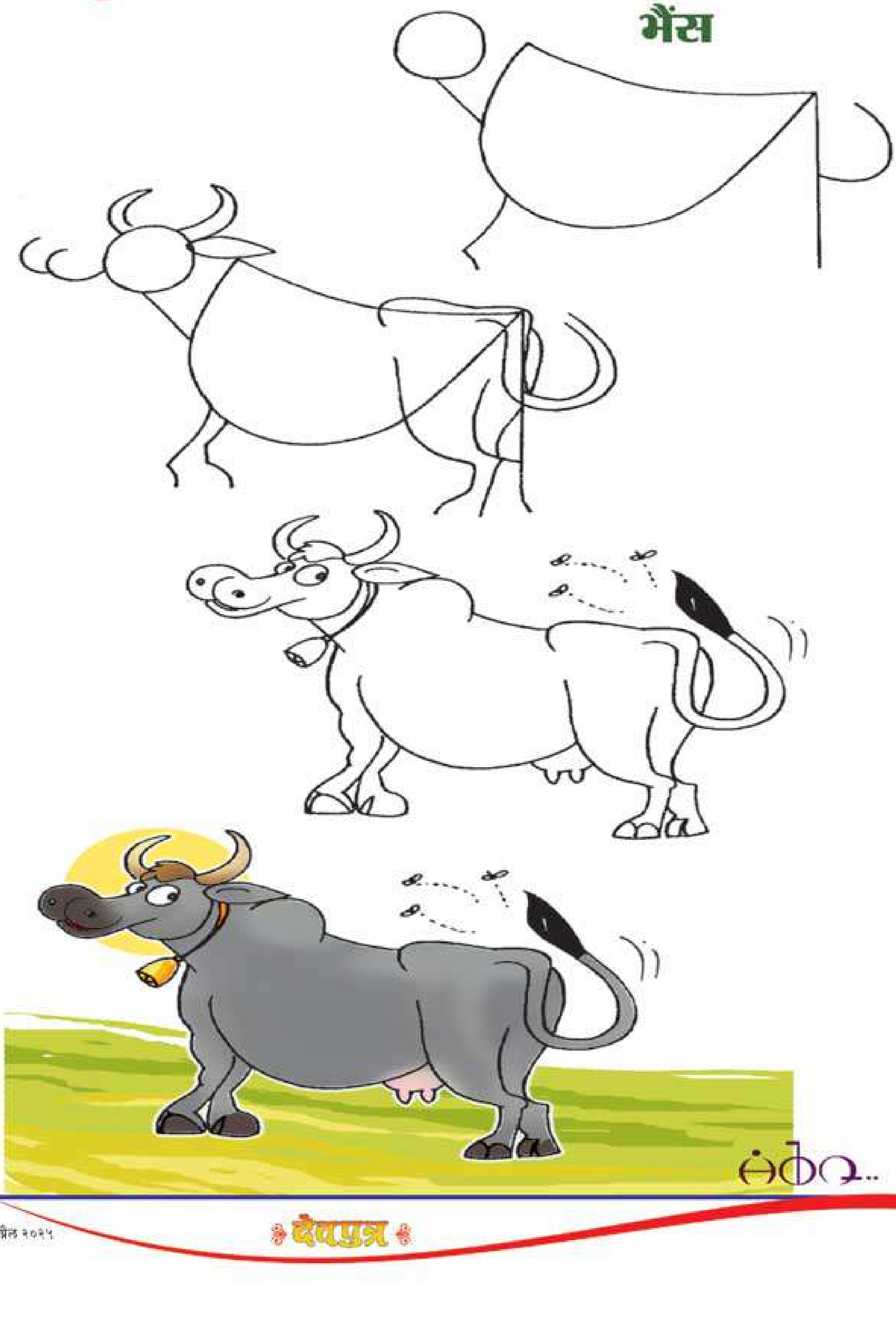

दा और बा

– डॉ. शशि गोयल

दा और बा ने एक दूसरे की ओर देखा, बहुत दिन बाद उन्हें खुली हवा मिली थी। नहीं तो सारा दिन कार्यालय से घर और घर से कार्यालय। वहाँ से आकर अमर उन्हें अलमारी के कोने में बंद कर देता था। यदि कार्यालय के अलावा कहीं जाना होता तो वह दूसरे जोड़ी जूते पहन लेता था। दा और बा के भाग्य में तो बस घर और कार्यालय ही था। कल अमर का पाँव कीचड़ में चला गया उनके शरीर में बदबू भर गई इसलिए आज धोकर उन्हें सुखा दिया।

छत पर चारों ओर उन्होंने देखा दा बोला– ''क्या विचार है बा जरा कहीं सैर की जाए।'' ''हाँ–हाँ चल नीचे सड़क पर कूद।'' दोनों खिसके ही थे कि मोनू बंदर की निगाह उन पर पड़ी उसने उन्हें बगल में दाबा और दूसरी छत पर कूद गया। खी–खी–खी दा हँसा। बा– ''हवा में उड़ने में मजा आ गया।'' हाँ शरीर गीला है न तो ठण्डी–ठण्डी हवा लगी तो अच्छा लगा।'' बा बोला।

मोनू उन्हें बगल में दबाए भाग रहा था कि दा ने अपनी डोरी से उसकी बगल में गुदगुदी कर दी। बा खिलखिला पड़ा। मोनू चिहुँक गया यह कैसी आवाज आ रही है? उसने उन्हें रख बगल खुजाई और उन्हें देखने लगा। फिर धीरे से बा को उठाकर मुँह के पास ले गया। ''यह है क्या?'' उसने उसे खाना चाहा। ''बाप रे!'' बा चीखा तो मोनू डर गया। उसने बा को फेंक दिया गिरते हुए बा चीखा– ''दा! कूद तू भी।'' दा भी कूद गया।

दोनों एक बॉलकनी में गिरे जरा देर शरीर सहलाया फिर चुपके–चुपके खिड़की में से अंदर झाँका। दा– ''कमरा तो अच्छा है चल कूद चलें।'' दोनों उसके अंदर कूद गए पूरे कमरे में फर्श बिछा हुआ था। वे उस पर चहल–कदमी करने लगे तभी दरवाजा खुला दोनों पलंग के किनारे सरक गए। एक चौदह–पन्द्रह वर्ष का लड़का अंदर आया आते ही उसने टी. वी. खोला एम टी वी चैनल लगाया और गाने के साथ नाचने लगा।

कुछ देर वह नाचता रहा फिर पलंग पर लेट

गया। लेटे-लेटे वह हाथ पैर फेंकता गाता रहा फिर सो गया। दा ने धीरे से बोला- ''बा! बाहर आ जा लड़का सो गया।'' टी. वी. चल रहा था लड़के की नकल करते दोनों नाचने लगे साथ ही साथ गाने लगे। लड़के ने करवट ली करवट के संग एक निगाह फर्श पर पड़ी, उसने आँखें मली दो जूतों को नाचते देख वह चीख पड़ा- ''माँ... माँ.... भूत।'' दा और बा चुपचाप खड़े हो गये एक स्थान पर। अब क्या करें। ''चुप खड़े रहते हैं देखें क्या होता है ?'' बा बोला।

लड़का पलंग पर उचककर बैठ गया था और बार-बार माँ को आवाज लगा रहा था। माँ दौड़ती हुई आई साथ ही घर के दो नौकर भी। ''क्या हुआ सुमित ? क्या हुआ क्यों चीख रहा है ?''

''माँ! भूत.... माँ भूत।'' सुमित की घिग्घी बंधी हुई थी। ''कहाँ है भूत तूझे दिन में भूत दिखाई दे रहा है, कहाँ हैं भूत, कम टी. वी. देखा कर न जाने क्या-क्या देखता रहता है।''

''नहीं माँ! ये देखो ये जूते नाच रहे थे।'' ''जूते... किसके हैं ये जूते कहाँ से आये ?'' ''मुझे नहीं मालूम पर ये जूते अभी नाच रहे थे।''

''जूते नाच रहे थे ?'' हैरानी से माँ ने दा और बा को देखा फिर कुछ पास आकर देखा उसे उसमें कुछ अजीब नहीं लगा। ''देख अब तू जो घिर-घिर प्ले स्टेशन पर गाड़ी चढ़ा भूत-वूत के गेम खेलता है बिलकुल बंद, ठीक से सोया कर अब सो फिर शाला का गृहकार्य पूरा करना चलो निक्कू, सन्नी अपना-अपना काम करो।''

''नहीं माँ! इन जूतों को हटाओ।'' सुमित चीखा। ''हाँ पर ये जूते हैं किसके यह समझ नहीं आया? आये कहाँ से निक्कू इन्हें हटाओ यहाँ से बाहर फेंक दो।'' परेशान-सी माँ ने कहा।

निक्कू को डर लग रहा था पता नहीं किसी ने कुछ जादू-मंतर तो नहीं किया होगा। उसने पकड़कर खिड़की से बाहर ऐसे फेंके जैसे साँप को पकड़ा हो। अब दा गिरा कूड़े के ढेर पर और बा गिरा नाली में। अब तो दोनों परेशान हाथ-पैर मार वहाँ से हटने का प्रयास करने लगे। पर उनके शरीर पर और कीचड़ लिपटने लगी बदबू से उनका दम घुटने लगा।

''दा.....।'' बा बोला- ''यह तो बहुत मुश्किल हो गई।'' हाँ बा.... जैसे भी हो चलें अपने घर पहुँचे इससे तो घर ही अच्छा था। हमारे बाबू हमें कितने प्यार से रोज पोंछते थे। हाँ हम पर पाउडर भी छिड़कते थे अब क्या करें ?''

इतने में जमादार कूड़ा उठाने आया उसने दा को देखा- ''अरे! वाह इतना बढ़िया जूता यह किसने फेंक दिया इसकी जोड़ी कहाँ है?'' जमादार ने इधर-उधर देखा नाली में बा नजर आया। ''वाह! मिल गया।'' कहकर उसने दा और बा को एक तरफ रख दिया और बाकी कूड़ा भरने लगा।

दा बा ने एक दूसरे को इशारा किया और भाग लिए। जिस घर के पास रुके वह उनका अपना घर था। रुककर हाँफने लगे। ''बाबू अब हमें अंदर ले लें बा'' दा बोला। इतने में घर का दरवाजा खुला और सौरभ बाहर आया।

''पिताजी! पिताजी!'' वह चीखा ''पिताजी! आपके जूते यहाँ पड़े हैं।'' अमर दौड़कर आए। ''अरे! यहाँ कहाँ से आये न हो बंदर ने फेंक दिए होंगे। हाय मेरे प्यारे जूते, बड़े आरामदेह हैं।'' कहकर जब उन्होंने प्यार से उठाए तो दा और बा ने एक दूसरे को देखा मानो हाथ बढ़ाकर हैण्ड-शेक कर रहे हैं। चौंक कर अमर ने जूतों को देखा- ''अरे! ये हिले कैसे ?'' पर फिर लेकर अंदर चल दिए। पर दिमाग में उलझन थी बंदर ने ऐसे कैसे फेंके कि ऐसा लग रहा था जोड़ी से घर में घुस रहे हों कमाल है बंदर का फेंकना भी। उहूँ कुछ भी हो उनके जूते आ गए थे उन्होंने फिर धोये और इस बार पंखे में सूखने रख दिए। दा बा ने चैन से एक-दूसरे को देखा और सो गए।

- आगरा (उ. प्र.)

बंदर की मानवता

– गोविन्द शर्मा

आपने खाई देखी होगी। पहाड़ी क्षेत्रों में तो होती ही है। कई बार मैदानों में भी दिख जाती है। उसमें कई बार पशु गिर जाते हैं। इंसान भी असावधानी से गिर जाते हैं। इंसानों को बाहर निकालने के लिए लोगों ने अपने–अपने तरीके खोज रखें हैं। कई बार पशुओं को भी बाहर निकाला जाता है। भारी होने के कारण पशुओं को बाहर निकालना काफी कठिन होता है।

उस गाँव के पास खाई थी। किसी के खाई में गिर जाने के बाद उसे बाहर निकालने के लिए युवक और बुजुर्ग भागदौड़ शुरू कर देते थे। अभी उस दिन देखा, खाई के किनारे एक पेड़ पर बैठा बंदर बड़े गौर से नीचे घूम रहे छोटे पिल्लों को देख रहा था। अचानक नीचे उतरा और एक पिल्ला उठाया और तेजी से पेड़ पे ऊपर चढ़ गया।

पिल्ले की माँ को पता चला तो वह बंदर पर बुरी तरह भोंकने लगी। पिल्ला भी बंदर की पकड़ से छूटने का प्रयास करने लगा। कुतिया पेड़ पर चढ़ने का प्रयास करने लगी तो बंदर पिल्ले सहित दूसरे पेड़ पर कूद गया।

कुतिया उस पेड़ की तरफ जाकर भोंकने लगी। इस हड़बड़ी में बंदर पिल्ले सहित खाई में जा गिरा एक बूढ़े बाबा ने उसे देखा। अपने घर की तरफ गए और एक लंबा रस्सा लेकर आए। उन्होंने सोचा था कि अब तक कई युवक उनकी सहायता करने के लिए खाई के पास आ गए होंगे। जब बूढ़े बाबा खाई के पास पहुँचे तो अलग ही दृश्य था।

वहाँ युवक तो थे पर सहायता के लिए तैयार नहीं थे। वह सब रील बनाने के शौकीन थे। सबके हाथ

में मोबाइल थे और कैमरा चालू कर खाई के किनारे खड़े थे। वे इस प्रतीक्षा में थे कि हो सकता है बंदर या पिल्ला अपने आप खाई से बाहर आ जाए।

यह भी हो सकता है कि गांव से उन्हें बचाने कोई आ जाए। इस दृश्य की अच्छी रील बन जाएगी। बूढ़े बाबा निराश होने वाले थे कि किनारे बैठा एक युवक उन्हें दिखाई दिया। उसके हाथ में मोबाइल नहीं था, एक किताब थी। बाबा ने सहायता के लिए कहा तो वह मुस्कुराया और बोला– ''आपने इतने युवकों को छोड़कर मुझे ही सहायता के लिए क्यों चुना?''

''क्योंकि उन सबके हाथ में चालू कैमरे वाला मोबाईल है। वे क्या सहायता करेंगे?''

''लेकिन मोबाईल तो मेरे जेब में भी है।''

''वहीं होना चाहिए। उसका उपयोग आवश्यकता होने पर या आपातकाल में ही करना चाहिए। क्या तुम इस रस्से के सहारे से खाई में उतरकर उस बंदर को बाहर निकलने में सहायता करोगे?'' वह तैयार हो गया। बाबा ने उस रस्से को एक पेड़ बे बांध दिया। युवक ने अपनी किताब बाबा को पकड़ा दी और मोबाइल जेब में ही रखा। बाबा ने भी बंदर के लिए केला उसे दे दिया।

वह रस्से से सहारे खाई में उतर गया। कुछ ही देर बाद बाबा ने उसे मोबाइल पर कहा– ''तुम्हें रस्से से सहारे ऊपर खींचने के लिए कुछ लोग आ गए हैं। क्या तुम्हें बंदर मिल गया?''

उसने उत्तर दिया– ''हाँ! यहाँ एक बंदर है। मैं उसे पकड़ना चाहता हूँ। पर वह छूटकर इधर–उधर कुछ ढूँढ़ने लगता है। पता नहीं वह मेरे पास क्यों नहीं टिकता है।''

काफी देर बाद युवक का भीतर से फोन आया तो सबने मिलकर उसे रस्से से ऊपर खींच लिया। बाहर आकर उसे युवक ने जो बताया वह काफी रोमांचक था। उसने बताया– ''मैंने जो वहाँ देखा, वह हैरान करने वाला था। बंदर मेरे पास में न आकर वहाँ उगी झाड़ियों, घास और कचरे में कुछ ढूँढ़ता रहा। बंदर को एक स्थान पर कुछ दिखाई दिया तो उसने वहाँ का कचरा हटाया। वहाँ मिला उसे वही पिल्ला जिसके साथ वह खाई में गिरा था। वह घायल था।

बंदर ने उसे उठाया और मेरे पास आकर मुझसे चिपक गया। बंदर ने केला भी मेरे हाथ से लेकर खाया और छिलका वहीं फेंक दिया।

अब मैं समझा, वह उस पिल्ले के बिना बाहर आने को तैयार नहीं था। बाहर आते ही उसने एक पत्थर पर पिल्ले को रख दिया और पेड़ पर चढ़कर उसे देखने लगा।''

बाबा ने भी अपना काम शुरू कर दिया। पिल्ले के मुँह में पानी की कई बूँदें डाली और उसकी सफाई करने लगे।

फिर बाबा बोले– ''इसें मैं अपने घर ले जाऊँगा और इसका उपचार करूँगा।'' बाबा पिल्ले को ले जाने लगे तो वह कुतिया भी चुपचाप उनके पीछे जाने लगी। अब तक गाँव के काफी लोग वहाँ जमा हो गए।

कुछ ने बाबा तो अधिकांश ने उस युवक की प्रशंसा शुरू कर दी कि उसने जान की परवाह न करके बंदर और पिल्ले को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। जबकि यह गाय भैंस बकरी की तरह दूध देने वाले जानवर नहीं हैं।

हर तरफ से प्रशंसा पर युवक बंदर की तरफ देखता और सोचता कि प्रशंसा तो बंदर की होनी चाहिए। क्योंकि मुझे तो उस समय क्रोध आने लगा था, जब बंदर मेरे हाथ नहीं आ रहा था।

पर बंदर इतना सहृदय और मानवीय निकला कि अपने घायल साथी पिल्ले को छोड़कर बाहर आने को तैयार नहीं हुआ।

– संगरिया
(राजस्थान)

नन्हा टॉमी

– प्रगति त्रिपाठी

रचना को बचपन से ही पशु-पक्षियों से बहुत लगाव था। वह हमेशा चिड़ियों के लिए पानी रखती। रचना के पिताजी अरविंद जी बैंक मैनेजर थे और माँ गृहिणी। रचना की शाला घर के पास ही थी। कार्यालय जाते समय पिताजी रचना को शाला छोड़ देते थे और छुट्टी के समय माँ उसे घर ले आती थी।

कुछ दिन पहले ही पास के मैदान में एक कुतिया ने चार-पाँच बच्चों को जन्म दिया था। बड़े प्यारे-प्यारे बच्चे थे। रचना रोज माँ के साथ उन्हें रोटी खिलाने चली जाया करती थी। उसने एक पिल्ले का नाम टॉमी भी रख दिया था।

वो बाकी बच्चों से अलग था। उजले शरीर पर काले धब्बे थे। धीरे-धीरे टॉमी उसे पहचानने लगा। एक दिन रचना माँ के साथ शाला से लौट रही थी तो सड़क के किनारे एक छोटा-सा पप्पी कुकिया रहा था शायद उसके पैर में चोट आई थी। रचना उसे देखते ही बोल पड़ी– ''अरे! ये तो टॉमी है। इसके पैर में तो चोट लगी है और खून भी आ रहा है। माँ इसे जल्दी डॉक्टर के पास ले चलो।''

''हाँ बेटा! यह बेचारा तो घायल हो गया है।''

मोहल्ले के वर्मा काका वहाँ से जा रहे थे। मनोरमा जी और रचना को देखा तो उनका हाल-चाल पूछने के लिए रुक गए, रचना को देखते ही बोले– ''कैसी हो बेटा ?''

''काका! मैं तो अच्छी हूँ पर टॉमी को पैर में चोट लगी है कृपया इसकी सहायता करिए, इसे डॉक्टर के पास ले चलिए।''

इतनी छोटी बच्ची में करूणा भाव देखकर वो तुरंत बोले– ''तुम घबराओ नहीं बेटा! मैं अभी इसे डॉक्टर के पास ले जाता हूँ।''

''तुम माँ के साथ घर जाओ।''

''नहीं काका मैं भी चलूँगी आपके साथ।''

रचना जिद करने लगी। रचना के जिद के आगे माँ को झुकना पड़ा और वह भी वर्मा काका के साथ चल पड़ी। डॉक्टर ने टॉमी की मरहम पट्टी की और कहा-''मामूली चोट है, जल्दी ठीक हो जाएगा।''

ये बात सुनकर सभी आश्वस्त हुए और टॉमी को लेकर वापस घर की ओर चल पड़े। टॉमी को वहीं मैदान में छोड़ दिया जहाँ उसकी माँ रहती थी। इस पर रचना कहने लगी– ''माँ! क्या हम टॉमी को अपने घर नहीं रख सकते ?''

''नहीं बेटा!'' ''लेकिन क्यों ?''

''अच्छा एक बात बताओ बेटा! क्या तुम अपनी माँ के बिना रह सकती हो ?''

''नहीं माँ!'' रचना ने माँ को कसकर पकड़ते हुए कहा। ''फिर हम इसे इसकी माँ से दूर कैसे कर सकते हैं ? इसकी माँ परेशान हो जाएगी ना।''

''हाँ वह तो है।'' रचना ने सोचते हुए कहा।

इसलिए इसे हम इसकी माँ के साथ ही रहने देते हैं। जैसे तुम टॉमी के साथ रोज खेलती थी और उसे खाना खिलाती थी वैसे ही करना। वो देखो टॉमी की माँ भी उसे ढूँढ़ते हुए आ गई। टॉमी को देखते ही उसकी माँ उसे प्यार से चाटने लगी। यह देखकर रचना मुस्कुरा उठी।

– बैंगलुरू (कर्नाटक)

राष्ट्रऋषि - बाबासाहेब आम्बेडकर

- निखिलेश महेश्वरी

संगठन चातुर्य व नेतृत्व करने की क्षमता के कारण आम्बेडकर आज देश के एक बड़े आधार बनते, परन्तु असाध्यता का उच्चाटन करने तथा अस्पृश्य वर्ग में आत्मविश्वास व चैतन्य निर्माण करने में उन्होंने जो सफलता प्राप्त की है, उससे उन्होंने भारत की बहुमूल्य सेवा की है। उनका कार्य चिरन्तन स्वरूप का, स्वदेशाभिमानी व मानवतावादी है।

बाबा साहब आम्बेडकर के जीवन के अनेक पहलू हैं, जो उन्हें मानव से महामानव के रूप में स्थापित करते हैं। बाबासाहब का आर्थिक चिंतन बहुत उत्कृष्ट था जो एक अध्ययन का विषय है। किसान, मजदूर और भारत के गरीब लोगों की आर्थिक कमजोरी के कारण और उसके समाधान क्या हो सकते हैं, इसका उन्होंने विश्लेषण किया था।

बाबासाहब आम्बेडकर ने अनेक धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया था। इन्हीं विशेषताओं के कारण भारत की स्वाधीनता के पश्चात बाबासाहब ने भारत के संविधान लिखने का एक महत्वपूर्ण कार्य उन्होंने बहुत ही कुशलता के साथ संपन्न किया। भारतीय नागरिकों को समता का, स्वतन्त्रता का, शोषण के विरोध का, धार्मिक स्वतन्त्रता का, संस्कृति शिक्षा का और न्यायायलीन संरक्षण का संविधान द्वारा अधिकार दिलाया जो आधुनिक भारत के लिए महत्वपूर्ण कदम था।

बाबासाहब के कार्य का मूल्यांकन हम इससे कर सकते हैं कि १४ अप्रैल १९४२ मो बाबासाहब के ५0वें जन्मदिन के अवसर पर वीर सावरकर ने निम्म लिखित संदेश भेजा था- ''व्यक्तित्व, विद्वत्ता, आम्बेडकर जैसे महान व्यक्ति का जन्म तथाकथित अस्पृश्य जाति में हुआ है, यह बात अस्पृश्यों के हृदय में व्याप्त निराशा को समाप्त करेगी व वे लोग बाबासाहब के जीवन से तथाकथित स्पृश्यों के वर्चस्व को आह्वान देने वाली स्फूर्ति प्राप्त करेंगे। आम्बेडकर के व्यक्तित्व व कार्य के बारे में पूरा आदर रखते हुए मैं उनकी दीर्घायु व स्वस्थ जीवन की कामना करता हूँ।''

बाबासाहब भीमराव आम्बेडकर ने भारत में चले आ रहे सामाजिक भेदभाव, अस्पृश्यता के विरुद्ध सामाजिक क्राँति खड़ी की। भारत की स्वाधीनता की लड़ाई में राजनीतिक रूप से सहभागिता करते रहे। भारत की स्वाधीनता के पश्चात् उनकी भूमिका और महत्वपूर्ण हो गई, जब राष्ट्र के संविधान निर्माण का दायित्व उन्हें सौंपा गया, जिसे उन्होंने सफलता के साथ पूर्ण किया।

उनके राष्ट्र के प्रति इस योगदान को ध्यान में रखकर उन्हें ३१ मार्च १९९0 को मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारतरत्न से सम्मानित किया गया।

बाबासाहब आम्बेडकर ने संविधान निर्माण में सभी समाज और सभी वर्गों को सम्मान दिलाकर कानूनी रूप से मान्यता दिलाई। और जिस प्रकार के विधान की आवश्यकता भारत को थी, उसकी रचना की।

सुशासन कैसा हो तो राम दरबार का चित्र संविधान की मूलप्रति में जोड़कर उन्होंने भारत की आदर्श राज व्यवस्था को दर्शाया। कई स्थानों पर वेदों की ऋचाओं का उल्लेख कर भारतीय जीवन मूल्य को मान्यता दी।

वर्तमान संदर्भ में बाबासाहब आम्बेडकर के विचार उतने ही प्रासंगिक है जितने उस समय थे लेकिन आवश्यकता है उनके विचारों को समझकर उसे ठीक प्रकार से समाज के बीच प्रचारित करने की जिससे बाबासाहब के व्यक्तित्व और कृतित्व को आम लोग समझ सकें। बाबासाहब आम्बेडकर जैसे महापुरुष देव योग से ही किसी निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए जन्म लेते हैं।

उसी प्रकार अपने उद्देश्य को पूर्ण कर अपने जीवन को सार्थक करने के साथ ही वह संपूर्ण मानव जाति को उपकृत करते हुए अमर हो जाते हैं। पूज्य बाबासाहब भी उन्हीं महापुरुषों की परंपरा से आते हैं, वह राष्ट्रपुरुष थे, वह युगपुरुष थे और वह राष्ट्रऋषि थे। उनके विचार आज भी सभी को प्रेरित करते हैं और युगों-युगों तक प्रेरित करते रहेंगे।

- भोपाल (म. प्र.)

(पुस्तक 'राष्ट्रऋषि : बाबासाहब भीमराव अंबेडकर' से साभार)

भूल भूलैया

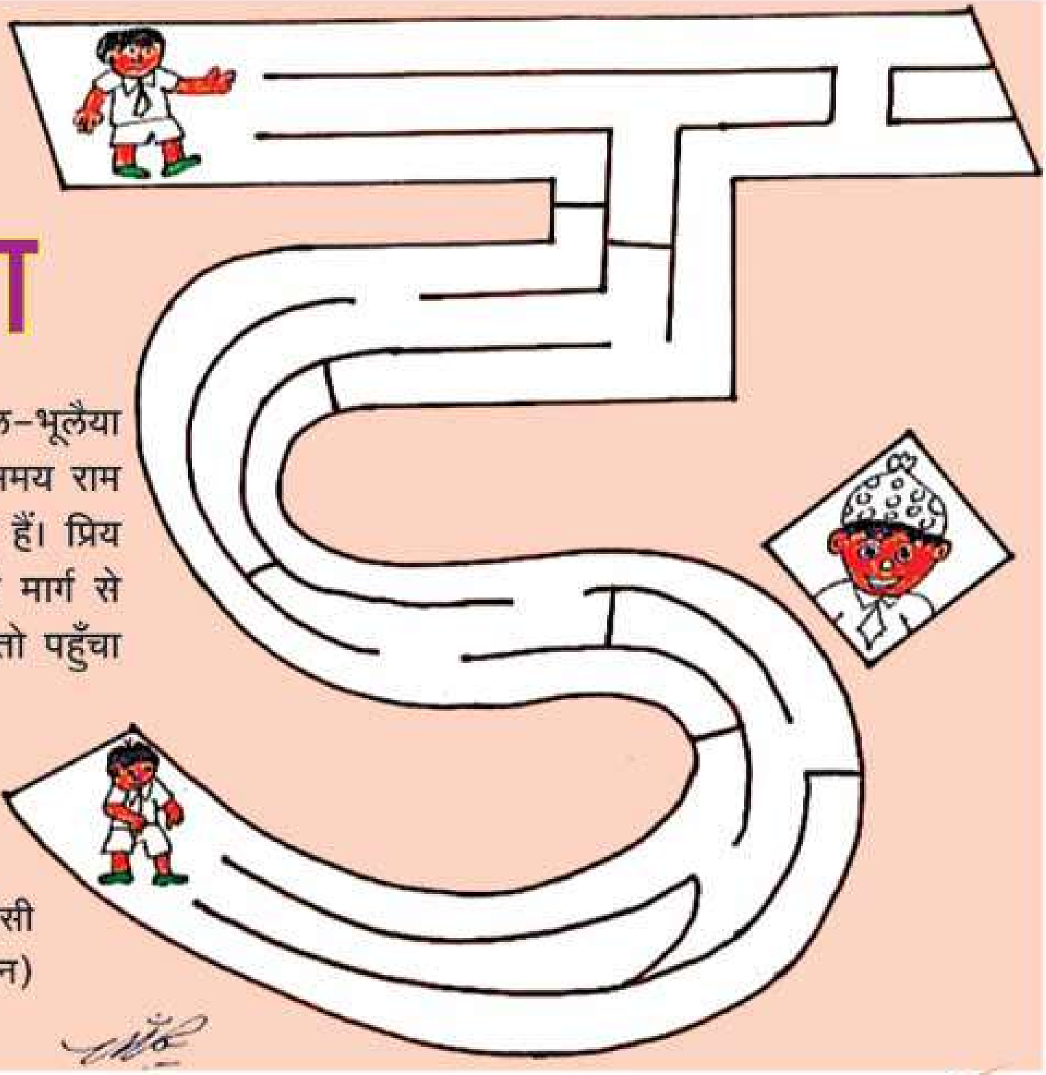

ड अक्षर की भूल-भूलैया की सड़क पर घूमते समय राम और श्याम बिछुड़ गए हैं। प्रिय मित्रो! आप इन्हें सही मार्ग से एक-दूसरे के निकट तो पहुँचा दीजिए।

- चाँद मोहम्मद घोसी
मेड़ता सिटी (राजस्थान)

पलटा पहाड़

– रजनीकांत शुक्ल

हमारे देश का सुदूर सीमान्त पूर्वोत्तर राज्य है अरुणाचल प्रदेश 'अरुणाचल' का अर्थ होता है 'उगते सूर्य का पर्वत'। इसकी राजधानी ईटानगर है। इसकी सीमाएँ दक्षिण में हमारे देश के असम राज्य और दक्षिण पूर्व में नगालैंड राज्य की सीमाओं से मिलती हैं। वहीं पूर्व में इसकी सीमाएँ बर्मा अर्थात् म्यांमार देश से पश्चिम में भूटान और उत्तर में चीन के तिब्बत से मिलती हैं।

इसीलिए यहाँ तिब्बत बर्मा और भूटानी संस्कृति का प्रभाव है सोलहवीं शताब्दी में तवांग में बना बौद्ध मंदिर यहाँ की विशेष पहचान है। तिब्बत के बौद्धों के लिए इसका बहुत महत्व है।

इसी अरुणाचल प्रदेश राज्य में उस दिन ऐसी बारिश हुई कि सुबह से शाम हो गयी लेकिन वर्षा थी कि रुकने का नाम नहीं ले रही थी। अलसुबह से ही बारिश ने अपनी पूरी तेजी दिखानी प्रारंभ कर दी थी।

लोग अभी बिस्तर में ही थे कि कभी धीमे तो कभी तेज कभी रुक–रुककर बादल बरसते ही जा रहे थे। ऐसे ही सुबह से बरसते–बरसते रुकने की प्रतीक्षा कर रहे थे। कितने ही लोगों को अपने–अपने काम पर जाना था। उनमें से जिन्हें बहुत आवश्यक था वे गए भी किन्तु आज की वर्षा ने तो बाकी लोगों को जैसे घरों में बंद कर रखने की कसम खा रखी थी।

ऐसे में एक हॉस्टल में बहुत सारी लड़कियाँ भी सिमटी–सिकुड़ी बैठी हुई थी। क्योंकि वह एक लड़कियों का हॉस्टल था। उस बारिश के कारण उनकी उस दिन की दिनचर्या में बाधा आ गयी थी। उनकी रोज की पढ़ाई भी सुचारू रूप से नहीं हो पा रही थी। एक तरह से जैसे छुट्टी–सा माहौल था।

दूसरे लोगों की तरह ही वे सब भी वर्षा के रुकने की प्रतीक्षा कर रहीं थीं। लगातार होने वाली वर्षा से वहाँ स्थान–स्थान पर पानी भर गया था। जिसके कारण पहले से ही उन कमजोर दीवारों के गिरने का खतरा मंडराने लगा था।

उन सिकुड़ी–सिमटी बैठी लड़कियों के समूह में एक लड़की पेमा भी थी। जो लगभग चौदह वर्ष की थी। उसके पिताजी साधारण पानी बनाने का काम करते हैं। उसके परिवार में उससे बड़ी चार बहनें और थीं जिनकी शादी हो गई थी।

एक बड़ा भाई भी था जो एक बौद्ध मठ में लामा बनने का काम सीख रहा था। पेमा के पिताजी पेमा को भी पढ़ाना चाहते थे इसलिए उन्होंने पेमा का प्रवेश इस रेजीडेशियल हॉस्टल में करा दिया था। जहाँ पेमा आठवीं कक्षा में पढ़ रही थी।

उस दिन की हुई बारिश में उसके साथ ऐसी घटना हो गयी जिससे पेमा के जीवन में बहुत बड़ा बदलाव ला दिया। वह भोली सीधी–सादी लड़की देश की अंतिम सीमा से सटे अपने छोटे–से जन्मस्थान से निकलकर न केवल देश की राजधानी में पहुँच गयी बल्कि देश के राष्ट्रपति जी ने उसे अपने हाथों से सम्मान प्रदान किया। उसके भाई और उसकी शाला

की वार्डन इस अवसर पर उसके साथ थी। क्या थी वह घटना और उससे पेमा का क्या संबंध था ? आइए जानते हैं।

लगातार होने वाली वर्षा का वह पानी जहाँ उसे स्थान मिला वहाँ से बहकर चल दिया और जहाँ उसे जगह नहीं मिली बाधा आई वहाँ रुक गया। यदि पानी बंद हो जाता तब तो ठीक था किन्तु लगातार होने वाली बारिश से वह पानी का बहाव दबाव बनाने लगा। ऐसी ही एक जगह वहाँ हॉस्टल की दीवार के पीछे की ओर थी। वहाँ जब पानी के निकलने को जगह नहीं मिली तो उसने दीवार पर दबाव बनाना शुरू कर दिया। उस कमजोर दीवार के दूसरी ओर वर्षा से बचने के लिए खड़ी, बैठी लड़कियाँ इस आने वाले संभावित खतरे से अनजान थीं।

अपने कक्षा और अन्य दूसरी कक्षाओं की लड़कियों के साथ ही पेमा भी उसी भीड़ का हिस्सा थी। हॉस्टल के वार्डन उस समय दूसरे अन्य कमरे की ओर थे। जहाँ और दूसरे बच्चे थे। तभी अचानक दीवार का भाग तेज आवाज करता हुआ नीचे की ओर गिरने लगा। यकायक आयी इस आफत से बच्चे घबरा गए और बचने के लिए दीवार से दूसरी ओर

भागे। जो बच्चे दीवार से दूर खड़े थे वे तो इसकी चपेट में आने से बच गए। किन्तु जो बच्चे दीवार से बिलकुल सट कर खड़े थे वे उसके लपेटे में आने से न बच सके।

तभी पेमा हिम्मत करके आगे बढ़ी और उसने दीवार की ईंटों को हटाना शुरू किया और उनमें से एक लड़की को खींचकर बाहर निकाल लिया। तभी उसे किसी दूसरी लड़की का हाथ दबा नजर आया। उसके हाथों में तेजी आ गई उसने जल्दी–जल्दी हाथ चलाते हुए मलबे को साफ किया और फिर उस दबी हुई लड़की की को बाहर खींचना शुरू किया। इतनी देर में शोर सुनकर दूसरे कमरे से वार्डन भी उस ओर आ गए। स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए वे तुरन्त आगे बढ़े और उन्होंने पेमा का सहयोग किया। उस लड़की को पेमा के साथ सहयोग करते हुए मलबे से बाहर की ओर खींच लिया। वार्डन को आगे बढ़ा देखकर कुछ और लड़कियाँ भी आगे आ गईं।

सबने मिलकर मलबा हटाया किन्तु अब उसके अन्दर कोई नहीं था। निकाली गई लड़कियों को काफी चोटें आईं थीं। शीघ्र ही हॉस्टल प्रशासन द्वारा उन्हें प्राथमिक सहायता दी गई। किन्तु उन्हें कुछ गुम चोटें भी आयीं थी जिसके कारण उन्हें हस्पताल भी ले जाया गया। जहाँ वे उपचार पाकर स्वस्थ हुईं।

पेमा की इस आगे बढ़कर मदद करने की बात को सुनकर सभी ने उसकी इस हिम्मत की प्रशंसा की। उसे वर्ष २०२० का बहादुरी की कोटी में अदम्य साहस के लिए प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्रदान किया गया। जिसे गणतंत्र दिवस के अवसर पर देश के राष्ट्रपति जी ने प्रदान किया।

नन्हे मित्रो !

अपनी चिन्ता छोड़ दूसरों के हित, आगे आते
वे ही सच्चे अर्थों में हैं परम वीर कहलाते।
जीवन क्या मिट्टी का ढेला बूँद पड़े गल जाए
पर असली जीना है वो, जो औरों के काम आए।

– नई दिल्ली

संतरा और नारंगी

– शिवम सिंह
कानपुर (उ. प्र.)

कहा संतरा ने नारंगी, सुन मेरी बहना।
दोनों चलें घूमने मेला, संग मेरे रहना।।

हम दोनों भाई–बहना
साथ–साथ घूमें।
मेले में झूला–झूले गें
आसमान चूमें।।

नारंगी ने कहा–जलेबी
है मुझको भाती।
मिले जलेबी गरम
कड़ाही भर में खा जाती।।

तभी संतरा बोला–मुझको
भाता रसगुल्ला।
अगर मिले जो रोज
करूँ रसगुल्लों से कुल्ला।।

मेले में दूकान लगाए
छंगा मल हलवाई।
दोनों ने उसकी दुकान से
खाई खूब मिठाई।।

मीठा खाते दोनों जीभर
लगा दाँत में कीड़ा।
दईया–दईया भैया–भैया
हुई जोर की पीड़ा।।

कहा डॉक्टर ने मीठा अब
बिल्कुल ही दो छोड़।
वर्ना दाँत तुम्हारे सारे
कीड़े देंगे तोड़।।

लाल बुझक्कड़ काका के कारनामे

-देवांशु वत्स

ऋषि–योद्धा : भगवान परशुराम

– डॉ. उमेश प्रताप वत्स

हिंदू पंचांग के अनुसार हर वर्ष वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि पर भगवान परशुराम का जन्मोत्सव बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया जाता है। भगवान परशुराम महर्षि जमदग्नि और रेणुका की संतान हैं जो कि भगवान विष्णु के सभी दस अवतारों में छठे अवतार माने गए हैं।

परशुराम अहिंसा की रक्षा करने के लिए शस्त्र उठाने के पक्ष में थे किंतु ऋषि जमदग्नि अस्त्र–शस्त्र उठाना गलत मानते थे। जिस कारण परशुराम जी कुछ समय के लिए आश्रम छोड़कर महेंद्र पर्वत पर चले गए। परशुराम जी की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर राजा सहस्रार्जुन ने कुछ सैनिकों को ऋषि जमदग्नि की अद्भुत गाय को लाने का आदेश दिया। आश्रम में पहुँचने पर ऋषि जमदग्नि ने उन्हें रोका और बहुत समझाने का प्रयास किया किन्तु वे दुष्ट नहीं माने तब दिव्य गाय की रक्षा के लिए उन्होंने अस्त्र उठाया और सबको घायल करके भगा दिया।

ऋषि ने पत्नी रेणुका को कहा कि परशुराम ठीक कहता है कि अहिंसा की रक्षा के लिए हिंसा भी करनी पड़ती है। हारे हुए सेनापति को देखकर सहस्रार्जुन बौखला गया और बड़ी सेना लेकर आश्रम पर धावा बोल दिया।

ऋषि व अन्य शिष्यों ने आत्म रक्षा व दिव्य गाय की रक्षा के लिए उनका मुकाबला किया किन्तु अधिक सेना होने के कारण वे लाचार होने लगे तब ऋषि ने गौ माता के समक्ष हाथ जोड़कर विनती की कि माता मुझे क्षमा करना मैं आपकी रक्षा न कर सका, अब आप अपनी रक्षा स्वयं करें।

गौ माता के चमत्कार से हजारों सैनिक प्रकट हुए और सहस्रार्जुन की सेना को नष्ट करने लगे तब धोखे से ऋषि को ढाल बनाकर सहस्रार्जुन दिव्य गाय को खोलकर ले गया।

इधर परशुराम जी क्रोध शांत होने पर आश्रम वापस आए तो घायल पिता व शिष्यों को देखकर सारी जानकारी ले दिव्य गाय को वापस लाने सहस्रार्जुन के राज्य में गए। जहाँ राजा के चारों बेटे दिव्य गाय का अपमान कर रहे थे। बेटों को चेतावनी देकर परशुराम दिव्य गाय को आश्रम ले आए किन्तु सहस्रार्जुन के चारों पुत्रों ने परशुराम जी से पहले आश्रम पहुँचकर घायल ऋषि जमदग्नि का वध कर दिया।

जब परशुराम जी ऋषि कक्ष में पहुँचे तो माता रेणुका मृत पति के समक्ष छाती पीट रही थी। माता को शांत करते हुए परशुराम ने प्रतिज्ञा की कि– ''हे माता! तुमने मेरे मृत पिता के समक्ष इक्कीस बार छाती पीटी है, मैं संकल्प लेता हूँ कि कायर, अत्याचारी सहस्रार्जुन के वंश को इक्कीस बार ही समाप्त करूँगा और जो उसकी सहायता के लिए आयेगा उसको भी यमलोक पहुँचाकर ही आपके समक्ष आऊँगा। तब परशुराम ने सहस्राबाहु वाले सहस्रार्जुन को उसके वंश सहित नष्ट किया तथा देने वाले पापी राजाओं को इक्कीस बार यमलोक पहुँचाकर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की। किन्तु यह परशुराम जी का महान योद्धा वाला एक पक्ष है।

परशुराम जिन्हें नारायण का अवतार माना गया है। माता–पिता के अतुलनीय भक्त होने के साथ ही वे

महान ज्ञानी भी थे। भगवान परशुराम के लिए कहा जाता है कि वह अपने माता-पिता की सभी बातों का अक्षरश: पालन करते थे।

श्रवण कुमार जिन्होंने अपने अंधे माँ-बाप की पूरे जीवन सेवा की और अंत में अपने कंधों पर दोनों को बैठाकर तीर्थयात्रा पर निकल गए। एक बार जब वे अपने माता-पिता को लेकर जंगल से जा रहे थे। माता-पिता को प्यास लगने पर वे निकट ही एक सरोवर से जल भरने लगे तभी वहाँ भगवान परशुराम भी आ गए और श्रवण कुमार से बोले- ''हे बालक! मैं बहुत प्यासा हूँ, कृपा करके मुझे पानी पिला दो।''

श्रवण कुमार आश्चर्य से परशुराम को देखने लगे। श्रवण कुमार ने परशुराम से कहा कि आप वेशभूषा से तो मुनिवर लगते हो किन्तु आपके हाथों में कुठार व धनुष मुझे उलझन में डाल रहे हैं पर आप जो कोई भी हो उच्च कुल के लगते हैं, इसके बाद परशुराम श्रवण कुमार से कहते हैं कि मेरे कर्मों को जाने बिना ही केवल मुझे देखकर ही उच्च कुल का सिद्ध कर दिया।

आगे श्रवण कहते हैं कि आप अवश्य ही किसी ऋषि के पुत्र होंगे, लेकिन मैं ठहरा एक छोटी जाति की माता का पुत्र। श्रवण कि इन बातों को सुनकर परशुराम क्रोधित हो उठे बोले- ''बालक! माँ कभी छोटी जाति की नहीं होती है, माँ तो माँ होती है। कर्मों से व्यक्ति की सही पहचान होती है छोटी जाति उच्च कुल ऐसा कुछ नहीं होता।''

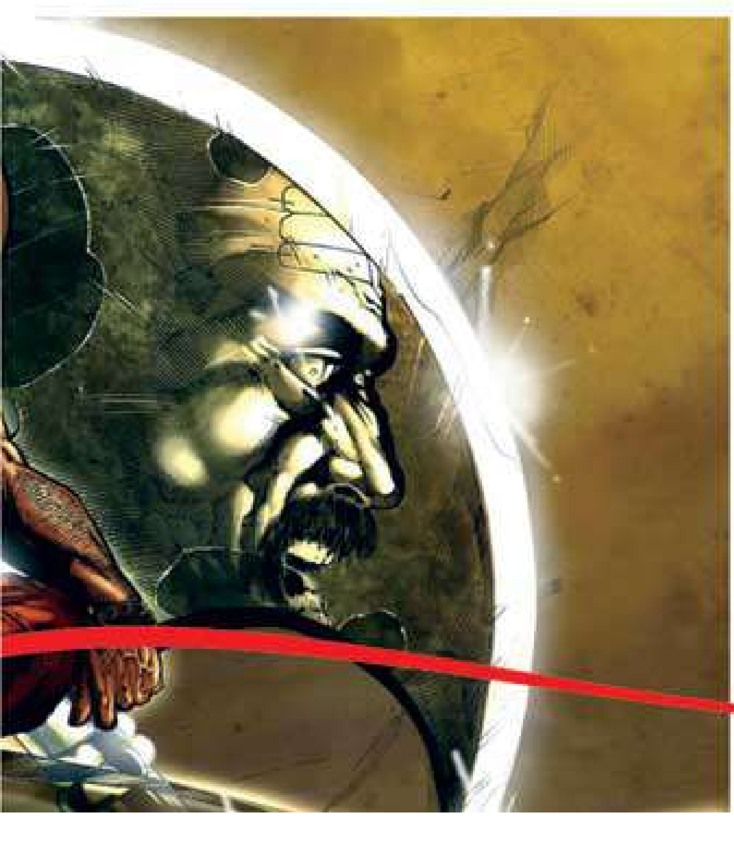

ये समझाने के बाद परशुराम ने फिर श्रवण कुमार से पानी पिलाने का आग्रह किया, तो श्रवण कुमार ने उन्हें बहुत ही आदर से पानी पिलाया।

जब श्रवण कुमार ने परशुराम से उनका परिचय माँगा तब श्रवण कुमार को पता चला कि यह तो भगवान परशुराम हैं जिनके दर्शन आज उसे हुए हैं। वह स्वयं को बहुत ही भाग्यशाली समझने लगा। इसके बाद श्रवण कुमार ने बताया कि वह अपने माता-पिता को लेकर तीर्थ यात्रा पर निकले हैं।

तब परशुराम कहते हैं कि- ''मुझे तो यहाँ कोई रथ या किसी प्रकार का कोई अन्य वाहन दिखाई नहीं दे रहा है फिर कैसे तीर्थ यात्रा पर जा रहे हो?''

इस पर श्रवण कुमार ने बताया कि- ''मैं बहुत ही साधारण परिवार से हूँ मेरे पास रथ आदि की कोई व्यवस्था नहीं है किन्तु माता-पिता की आज्ञा का पालन करना मेरा धर्म है। इसी धर्म का पालन करने के लिए मैं कंधे पर ही अपने माता-पिता को कावड़ में बैठाकर पैदल ही तीर्थ यात्रा कराने के लिए निकल पड़ा हूँ।''

श्रवण की इन बातों को सुनकर परशुराम भावुक हो उठे और उनके अपने माता-पिता से मिलाने का आग्रह कर बोले- ''मैं उन माता-पिता के चरण स्पर्श करना चाहूँगा जिन्होंने तुम जैसी संतान को जन्म दिया है।''

भगवान परशुराम ने श्रवण के माता-पिता के चरण स्पर्श किए। श्रवण के माता-पिता को जब ज्ञात हुआ कि स्वयं भगवान परशुराम आये हैं। तो वे अत्यंत गद्-गद् हुए। भगवान परशुराम ने श्रवण कुमार को आशीर्वाद दिया कि- ''तुम्हारी यात्रा मंगलमय हो। उन्होंने कहा कि जब तक यह संसार रहेगा श्रवण तुम्हारा नाम माता-पिता के भक्त बेटे के रूप में श्रद्धा से लिया जाएगा।''

- यमुना नगर (हरियाणा)

सूरज और चाँद

– प्रवीण कुमार जिंदल, रेवाड़ी (हरियाणा)

सूरज हूँ मैं, तू है चंदा, अपनी अलग कहानी
रोज समय पे आता मैं, तू करता मनमानी

सुबह सवेरे पूरब में उग
पश्चिम में सो जाता।
नित्य सुबह आने का अपना
वादा रोज निभाता।।

पर तू चंदा पता नहीं कब
किस दिन खो जाए?
घटता बढ़ता रूप देखकर
मुझे अचंभा आए।।

कभी दोपहर तो कभी शाम
और कभी रात को आता।
पूर्णिमा को दिखकर पूरा
मावस को खो जाता।।

चंदा बोला, सूरज दादा
सुन लो मेरी बात।
तुमसे उजला दिन होता है
मुझसे मीठी रात।।

इस दुनिया में होती सबकी
अलग–अलग सी रीत।
सबकी अपनी–अपनी बोली
अपने–अपने गीत।।

एक रंग और एक ढंग के
कैसे हो हालात?
रोज मेरे संग होती है फिर
तारों की बारात।।

यूँ तो तारे दिन में होते पर
फिर नजर न आएँ।
तेरी जगमग चकाचौंध से
शर्माकर छुप जाएँ।।

आपस की इस नोंक झोंक में
यूँ न समय गवाएँ।
चमके–दमके तारों के संग
अम्बर में छा जाएँ।।

गोपाल और बैरागी

– तपेश भौमिक

एक बैरागी गोपाल को पहचानता था। वह भगवान को भोग लगाने के लिए चंदा इकत्रित कर रहा था। राह चलते गोपाल से उसकी भेंट हो गई। उसने सोचा कि गोपाल से कुछ मांगा जाए। लेकिन साथ ही उसने यह भी सोचा कि गोपाल जैसे कंजूस से कुछ चंदा वसूलना कठिन है। फिर भी उसने यह सोचा कि भगवान के नाम पर गोपाल 'ना' नहीं कहेगा। लगे हाथ यह भी सोचने लगा कि यदि वह गोपाल से चंदा लेने में सफल हो जाता है तो लोग उसकी वाह–वाही भी करेंगे।

जैसी सोच वैसा ही काम। उसने बिना कुछ समय गँवाए गोपाल के सामने आकर कहा– ''गोपाल भैया! मैंने सुना है कि आप खूब दान–पुण्य का काम करते हैं। अत: मैं चाहता हूँ कि भगवान को भोग लगाने के लिए आप कुछ दान दे दें तो आपके स्वर्ग जाने का रास्ता एकदम साफ हो जाए। वैसे अभी ब्रह्म मुहूर्त भी चल रहा है। स्वर्ग के रास्ते कोई रुकावट आने का प्रश्न ही नहीं उठता।''

गोपाल ने मन–ही–मन विचार किया कि सुबह–सवेरे कुछ दान–पुण्य कर दिया जाए तो क्या हर्ज है। अभी मुहूर्त भी अच्छा है। जीवन भर तो झूठ–सच का खेल खेलता रहा, कुछ पुण्य फल भी कमाना चाहिए। ऐसा सोचते हुए वह बातों–बातों में अपने फतुए की जेब में हाथ डाला और कुछ अन्यमनस्क–सा एक सिक्का निकालकर बैरागी की हथेली पर रख दिया। सिक्का पाकर बैरागी बहुत प्रसन्न हुआ।

उसे दोहरी खुशी हो रही थी। पहली खुशी यह हुई कि उसे पूरे एक रुपये का चाँदी का एक सिक्का मिला था। (उन दिनों एक रुपये का मूल्य बहुत अधिक होता था।) दूसरी खुशी यह थी कि उसने गोपाल जैसे कंजूस से चंदा लेने में सफलता प्राप्त की थी। वह आशीर्वाद देता हुआ चलने लगा तो गोपाल का माथा ठनका। उसने अपने जेब में फिर से हाथ डाला और टटोल कर देखा कि उसने इकन्नी के बदले एक रुपये का सिक्का दे दिया है।

अब गोपाल जैसे धुरंधर को पसीना छूटने लगा। उसने सोचा कि बैरागी से सिक्का कैसे लौटा लिया जाए। दान दी हुई वस्तु को लौटा लेना भारी

बदनामी का कारण बन सकता है। तभी उसने जोर से पुकारा, ''बैरागी भाई! जरा सुनते जाना।'' बैरागी ने गोपाल की पुकार सुनी तो उसकी बाँछें खिल गईं। वह खुशी–खुशी वापस लौट आया।

''अच्छा बैरागीजी! आप यह बताओ कि आपकी अवस्था कितनी है?'' बैरागी ने ऐसा प्रश्न सुनकर कुछ अचंभित–सा होकर पूछा– ''अचानक मेरी अवस्था क्यों पूछ रहे हैं?''

इस पर गोपाल ने कहा– ''इतनी छोटी–सी अवस्था में आप संसार वैरागी कैसे हो गए? इसका राज क्या है?'' इतना सुनते ही बैरागी बहुत प्रसन्न हो गया। उसने अपनी उचित अवस्था को कुछ और घटाकर कहा– ''हम साधु–संतों की अवस्था क्या! हम तो संसार विरागी हैं। आप जब पूछ ही रहे हैं तो मैं बता देता हूँ। इस समय मेरी अवस्था यही कोई इक्कीस वर्ष की होगी।''

इतना सुनते ही गोपाल ने बड़ी गंभीरता से कहा– ''बैरागी भाई! आप तो परम पुण्यात्मा ठहरे। इतनी छोटी–सी अवस्था में संसार विरागी हो गए हैं। मेरा सिर श्रद्धा से आपके आगे झुका जा रहा है। वैसे मैं आपकी एक सहायता कर सकता हूँ।''

इतना सुनते ही बैरागी बहुत प्रसन्न हो गया। उसने सोचा कि गोपाल भाई और कुछ दान करने वाले हैं।

''देखो जी बैरागीजी! आप की अवस्था इक्कीस है और मेरी इक्कावन है। अब आप ही बताओ कि पहले स्वर्ग कौन जाएगा?'' गोपाल ने बहुत वृद्धत्व दिखाते हुए कहा।

''अवस्था के अनुसार तो आप ही पहले जाने वाले हैं।'' बैरागी ने भोलेपन से कहा।

''तब ऐसा कीजिए कि आप वह एक रुपये का सिक्का मुझे लौटा दें। मैं पहले स्वर्ग जाऊँगा और भगवानजी को भोग लगा दूँगा। आप चिंता मुक्त रहिए।''

इस बात को सुनते ही बैरागी का चेहरा फक्क पड़ गया। उससे कुछ कहते नहीं बना। उसने उस सिक्के को निकालकर गोपाल के हवाले कर दिया।

– कूचबिहार (पश्चिम बंगाल)

पहेलियाँ

पहेलियाँ

– हरदेव सिंह धीमान

१)

छुओ मुझे तो सुगंध फैलाऊँ
पूजा के तो काम ही आऊँ
औषधीय गुण है मुझ में भारी
पूजते मुझको नजर और नारी।

२)

जल में उपजता जल में खिलता
नदी, पोखर, तालाब में मिलता
देवी–देवताओं का हूँ मैं आसन
मेरे नाम का करो संभाषण।

३)

कई रंगों में मिलता हूँ मैं
काँटों पर ही खिलता हूँ मैं
गुलकंद बनाने में आता काम
झट से बतलाओ मेरा नाम।

४)

अफगानिस्तान से आता हूँ
मसालों में गिना जाता हूँ
बनता हूँ पेड़ों के रस से
बतलाओ क्या कहलाता हूँ।

– शिमला (हिमाचल प्रदेश)

उत्तर- १) तुलसी, २) कमल, ३) गुलाब, ४) हींग।

नवासे का निधन

– अरविन्द जवळेकर

(गतांक से आगे)

पुत्र के निधन के पश्चात अहिल्या माता के लिए केवल अपना नवासा नथ्याबा ही आशा की किरण रह गया था। वे उसे योग्य शिक्षा–दीक्षा देकर अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहती थीं। किन्तु ईश्वर को यह भी मान्य नहीं था। केवल २१ वर्ष की अल्पायु में ही नथ्याबा भी क्षय रोग का शिकार होकर इस दुनिया को छोड़ गया।

इससे दु:खी होकर अहिल्या माता के जामाता यशवंत राव फणसे भी चल बसे। उनकी पत्नी और अहिल्या माता की पुत्री मुक्ताबाई भी पति के साथ सती हो गई। अब अहिल्या माता के सभी मोहपाश समाप्त हो गए थे।

उनकी जीने की कामना भी समाप्त हो चुकी थी। ऐसी अवस्था में भी वे अपने राज–काज संबंधी कर्त्तव्यों का पालन कर रही थी। धर्म–कर्म का पालन कर रही थी। वर्ष १७९५ का श्रावण मास चल रहा था। महेश्वर के सभी मंदिरों में धार्मिक अनुष्ठान हो रहे थे।

किन्तु माता अहिल्या का स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा था। वे गरीबों तथा आवश्यकता वाले व्यक्तियों को दान–धर्म कर रही थी। १३ अगस्त १७९५ को श्रावण वद्य चतुर्दशी के दिन वे प्रात: से केवल गंगा जल ग्रहण कर रही थी। उन्होंने मोक्ष–धेनु का दान किया। और शंभु महादेव का नाम स्मरण करते हुए, किसी योगिनी की भाँति शांत चित्त से अपने नश्वर देह को त्याग दिया।

उनकी आत्मा दिव्य ज्योति में विलीन हो गई। अपने प्रजाजनों को बिलखता छोड़ वे हमेशा के लिए

इस दुनिया को छोड़कर चली गईं।

अहिल्या माता का जीवन

अहिल्या माता ने अपना संपूर्ण जीवन एक साध्वी की तरह सादगी से बिताया। उन्होंने अपने राज्य को ईश्वर को समर्पित कर दिया था। वे शासन किसी रानी के रूप में नहीं ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में करती थीं। उनके तथा उनके पश्चात् भी, राज्य के भारतीय संघ में विलीन होने तक उनके राज्य के सभी आदेश राजा के नाम पर नहीं, ईश्वर के नाम पर **'शिव शंकर आदेश'** की मुहर के साथ जारी होते थे।

वे शासकीय धन का एक पैसा भी स्वयं पर व्यय नहीं करती थी। उन्होंदे देशभर में किए निर्माण कार्य भी स्वयं के निजी धन से किए थे। वे प्रजा से पुत्र की भाँति प्रेम करती थीं।

उनका द्वार लोगों के लिए सदैव खुला रहता था। उनके न्याय को सारे देश में सम्मान दिया जाता था। यहाँ तक कि कई राज्य आपसी विवाद के समय न्याय कराने अहिल्या माता के पास आया करते थे।

उनके लिए प्रजा के मन में अपार प्रेम, श्रद्धा तथा आदर था। इसलिए वह उनको रानी नहीं अपनी माता ही समझती थीं। इसीलिए वे लोक माता के रूप में लोगों द्वारा पूजी जाती हैं।

– इन्दौर (म. प्र.)

पहेली

बूझो नाम : करो प्रणाम

(१)

अमृतसर में है बना मंदिर भव्य महान।
सोने के पत्तर चढ़े देख जगत हैरान।।
तुम भी जाकर अपना माथा वहाँ झुकाओ।
किसने उसकी नींव रखी हमको बतलाओ।।

(२)

अनगिन बलिदानों से पावन हुई जहाँ की माटी।
भारत का है गौरव अमृतसर की पावन धाती।।

(३)

जलियांवाला बाग में हुए वीर बलिदान।
गोली खाकर भी रखा भारत का सम्मान।।
इस पावन धरती की मिट्टी अपने शीश लगाओ।
जिस दिन कांड हुआ था उसकी दिनांक बतलाओ।।

(४)

माली के घर जन्म लिया थी शिक्षा में रुचि भारी।
हर घर में सुधार होगा यदि पढ़ जाएगी नारी।।
सबसे पहले अपने घर से शुरू किया परिवर्तन।
उन्हें महात्मा कहकर करते आज सभी अभिनंदन।।

(५)

इसी माह में जन्में दोनों महावीर कहलाए।
एक अंजनी लाल दूसरे त्रिशला पुत्र कहाए।।
नाम बताओ उनका बच्चों करना उन्हें प्रणाम।
मंगलकारी गाथा उनकी पावनकारी नाम।।

उत्तर– १) गुरु अर्जुन देव। २) जलियांवाला बाग। ३) १३.०४.१९१९। ४) ज्योतिबा फुले। ५) महावीर हनुमान, महावीर स्वामी।

श्रद्धा और विश्वास

– डॉ. मनोहर भण्डारी

भगवान में आस्था और विश्वास तथा स्वास्थ्य– अमेरिका और ब्रिटेन के क्रमश: ९० और ५९% मेडिकल स्कूलों में **स्वास्थ्य और अध्यात्म** विषय को पढाया जाता है। भारतीय संस्कारों का पालन करते हुए, प्रतिदिन मंदिर जाएँ और अहोभाव के साथ भगवान के दर्शन करें।

पूजा की क्रिया से अधिक भाव पूजा पर ध्यान दें। मंदिर में दोहराएँ, दर्शनम् पाप नाशनम्। घर पर पूजा, जाप, स्वाध्याय, शास्त्रों का पारायण या पाठ आदि अवश्य करें। बच्चों को मंदिर अवश्य ले जाएँ। भगवान पर पूर्ण आस्था रखें।

मार्कस इंस्टीट्यूट ऑफ इन्टीग्रेटिव हेल्थ के निदेशक और जेफरसन यूनिवसिर्टी हॉस्पिटल के वरिष्ठ फिजिशियन **डॉ. एंड्रयू न्यूबर्ग**, एम. डी. और **मार्क राबर्ट वाल्डमैन** ने मिलकर **हाउ गॉड चेंजेज यो ब्रेन** नामक पुस्तक में लिखा है कि भगवान में विश्वास करने से मस्तिष्क में रचनात्मक और क्रियात्मक बदलाव हो जाते हैं।

प्रार्थना करने से व्यक्ति स्वस्थ होने लगता है। न्यूरोसाइंटिस्ट **फ्रेड एग्बेअरे** ने अपने क्लिनिकल अनुभवों के आधार पर लिखी पुस्तक **बेनिफिट्स इन गॉड** में लिखा है कि यदि हम ईश्वर पर पूरी आस्था रखें तो बीमारियों को परास्त कर सकते हैं। मंदिर में परिक्रमा कीजिए, तालियाँ बजाइए।

साइकोलॉजी एण्ड बिहेवियरल साइंस इंटरनेशनल जर्नल में प्रकाशित **क्लेपिंग हेज इनक्रेडिबल बेनिफिट्स** नामक शोध में लिखा है कि तालियाँ बजाने से मस्तिष्क की कार्यक्षमता तथा एकाग्रता में सुधार होता है। इम्युनिटी बढ़ती है, संक्रमणों का खतरा कम हो जाता है।

मंत्रों का जाप– विदेशी वैज्ञानिकों के अनुसार मंत्रों के जाप से शरीर टॉक्सिक पदार्थों से मुक्त होने लगता है तथा बीमारियों से मुक्ति मिल सकती है। जेम्स हार्टजेल, जिल ई बोर्मेन, थामस एशले–फरेंड, डॉ. हर्बर्ट बेंसन, डॉ. हार्वर्ड स्टिंगरिल जैसे लगभग एक दर्जन वैज्ञानिकों ने मंत्रों पर शोध कर उनकी प्रभावशीलता को सत्यापित किया है।

फिजिशियन और नर्सेस कुछ रोगों में अपने रोगियों को मंत्र जपने की सलाह देते हैं। भारतीय दर्शन में राम–राम को मंत्रों का मुकुटमणि माना गया है। यह छोटा–सा मंत्र बोलने और दुहराने में सरल भी है।

आचार्य चरक ने लिखा है कि भगवान विष्णु के हजार नाम में से किसी भी एक नाम का जप रोगहारी होता है। हो सकें तो घर को चार्ज करने के लिए मंत्र चार्जिंग मशीन का उपयोग करें। वैज्ञानिक का कहना है कि मंत्र पर आस्था न हो और अर्थ नहीं जानते हैं तो भी लाभ होता है।

– इन्दौर (म. प्र.)

मलेरिया रोग कारण और निदान

– डॉ. मनमोहन प्रकाश श्रीवास्तव

शिष्य– गुरुजी मेरे भाई को डॉक्टर ने मलेरिया रोग बताया है। इस रोग के बारे में कुछ बताने का कष्ट करें।

गुरुजी– क्या तुम्हारे भाई को बुखार आया था, कंपकंपी लगी थी, सिर दर्द हुआ था, उल्टी आई थी? अर्थात् इनमें से कोई भी लक्षण दिखाई दिये थे।

शिष्य– जी गुरुजी! उसे ठंड देकर बुखार चढ़ा था।

गुरुजी– मेरे द्वारा बताए गए सभी लक्षण मलेरिया रोग के ही हैं। इनमें से कौन से लक्षण रोगी में उभर कर सामने आएंगे। यह रोगी की प्रकृति पर निर्भर करता है। किन्तु ऐसे ही कुछ लक्षण अन्य बीमारी में भी दिखाई देते हैं अत: रोग को सुनिश्चित करने के लिए डॉक्टर की सलाह पर रक्त का परीक्षण कराना उचित होता है।

शिष्य– ठीक है गुरुजी मैं आज ही डॉक्टर को दिखाकर अपने भाई के रक्त की जाँच करवा लेता हूँ। पर गुरुजी आप ये तो बताएँ कि यह रोग होता कैसे है? और क्या यह जान लेना रोग है?

गुरुजी– मलेरिया मच्छर के काटने के कारण होने वाला एक रोग है। वस्तुत: यह रोग प्लास्मोडियम परजीवी नामक सूक्ष्म जीव द्वारा होता है जो मच्छर में पनप रहे होते हैं। अत: मच्छर द्वारा मनुष्य का खून चूसने (काटने) के दौरान ये परजीवी मनुष्य के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं वहाँ ये जीव अपनी संख्या में वृद्धि करके इस रोग को जन्म देते हैं।

समय पर इस बीमारी का उपचार न कराने से शरीर में निरंतर मलेरिया परजीवियों की संख्या बढ़ते रहने के कारण यह रोग घातक और जान लेवा भी हो सकता है।

शिष्य– क्या यह संक्रामक रोग है?

गुरुजी– यह संक्रामक रोग की श्रेणी में नहीं आता है और ना ही छूने, साथ रहने, साथ खाने से फैलता है। अत: तुम अपने भाई की देखभाल नि:संकोच कर सकते हो।

शिष्य– गुरुजी तो आपने मादा मच्छर का उल्लेख किया है। इसका कहीं यह अर्थ तो नहीं कि नर मच्छर से यह रोग नहीं फैलता है।

गुरुजी– बिल्कुल सही समझा तुमने।

शिष्य– पर गुरुजी ऐसा क्यों और कैसे संभव है?

गुरुजी– नर मच्छर शाकाहारी हैं और भोजन के लिए पौधों का रस चूसता है। जबकि मादा मच्छर को अपनी वंश वृद्धि के लिए स्तनधारी जीव जिसमें मनुष्य भी आता है, का खून चूसना उसकी मजबूरी है क्योंकि अंडे देने के लिए उसे जिस प्रोटीन की आवश्यकता होती है वह उसे स्तनधारियों के खून से ही मिलता है। साथ ही नर मच्छर में चुभाने और चूसने वाले मुखांग नहीं पाये जाते ये मुखांग केवल मादा मच्छर में ही होते हैं।

शिष्य– भारत में मलेरिया परजीवी की कौन-सी प्रजातियाँ मलेरिया रोग को फैलाने के लिए प्रमुख रूप से उत्तरदायी हैं?

गुरुजी– मलेरिया परजीवी को वैज्ञानिकों की भाषा में प्लाज्मोडियम कहते हैं और इसकी चार प्रमुख प्रजातियाँ भारत में पाई जाती हैं जो इस रोग को फैलाने के लिए जिम्मेदार हैं।

शिष्य– ये प्रजातियाँ कौन–सी हैं ?

गुरुजी– प्लाज्मोडियम फैल्सीफेरम, प्लाज्मोडियम वाइवैक्स, प्लाज्मोडियम ओवेल तथा प्लाज्मोडियम मलेरी।

शिष्य– क्या मच्छर मलेरिया के अलावा कोई अन्य रोग भी फैलाता है ?

– **गुरुजी**– हाँ! मच्छर की विभिन्न प्रजातियाँ विभिन्न रोगों को फैलाती हैं जैसे– १) मलेरिया– मादा एनोफिलिस मच्छर से होता है। २) डेंगू– मादा एडीज एल्बोपिक्टस और एडीस एजिप्टी द्वारा फैलता है। ३) पीला (पीत) बुखार– मादा एडीज एजिप्टी मच्छरों से फैलता है। ४) जापानी इंसेफेलाइटिस– मादा क्यूलेक्स प्रजाति के मच्छरों से फैलता है। ५) जीका वायरस रोग– मादा एडीज प्रजाति के मच्छर से होता है। ६) चिकनगुनिया– एडीज एजिप्टी और एडीज एल्बोपिक्टस से फैलता है। ७) वेस्ट नायल बुखार– यह रोग क्यूलेक्स पिपियन्स, क्यूलेक्स टार्सलिस, क्यूलेक्स क्विनक्वेफासियाटस आदि से होता है।

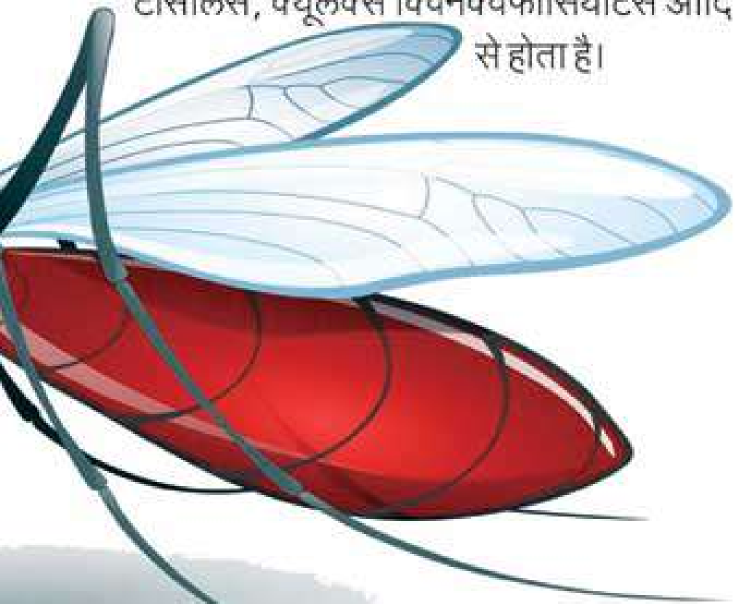

शिष्य– गुरुजी क्या ये सभी रोगों सूक्ष्मजीवी प्रोटोजोन्स प्लाज्मोडियम द्वारा होते हैं जैसे मलेरिया होता है ?

गुरुजी– नहीं! जीका रोग फ्लाविविरिडिए विषाणु से होता है, चिकनगुनिया CHIKV विषाणु से होता है, वेस्ट नायल बुखार वेस्ट नायल वायरस से होता है, जापानी एनसिफेलिटिस विषाणु सेंट लुई एलसिफेलिटिस से होता है, पीत ज्वर फ्लेविवायरस जीनस का एक आरएनए विषाणु से होता है जबकि डेंगू के लिए डीईएनवी–१, डीईएनवी–२, डीईएनवी–३, डीईएनवी–४ नामक वायरस जिम्मेदार है।

शिष्य– क्या इन सभी रोगों के लक्षण एक जैसे हैं ?

गुरुजी– नहीं! लक्षण हमेशा रोग के प्रकार और रोगी की प्रतिरोधात्मक क्षमता पर निर्भर करते हैं। कई बार कुछ लक्षण एक से अधिक रोगों में समान होते हैं। इसलिए चिकित्सक से परामर्श अवश्य लेना चाहिए।

शिष्य– ऐसा क्यों होता है गुरुजी ?

गुरुजी– अधिक गर्मी और अधिक ठंड मच्छरों के लिए कष्टदायी है तथा वंश वृद्धि के लिए अनुकूल भी नहीं। इसीलिए अधिक गर्मी और अधिक सर्दी में मच्छरों की संख्या नगण्य हो जाती है। जबकि वर्षा ऋतु मच्छरों के लिए उपयुक्त होती है, क्योंकि इस ऋतु में वातावरण का तापमान मच्छरों के जीवन के लिए अनुकूल रहता है।

शिष्य– वंश वृद्धि के लिए वर्षा ऋतु ही क्यों उपयुक्त है ?

गुरुजी– इस ऋतु में तापमान का अनुकूल होने का एक कारण तो तापमान है ही किन्तु दूसरे महत्वपूर्ण कारण जानने के लिए बच्चों तुम्हें मच्छरों का जीवन चक्र भी समझना होगा। वास्तव में मादा मच्छर रुके हुए स्वच्छ पानी में अण्डे देती है। पानी में

ही अण्डे से लार्वा और फिर उससे प्यूपा बनता है। प्यूपा से मच्छर बनते ही हवा में उड़ जाता है। वर्षाकाल में मादा मच्छरों को अण्डे देने के लिए स्थान–स्थान पर (घर और बाहर) रुका हुआ पानी मिल जाता है।

शिष्य– इसका अर्थ तो यह हुआ गुरुजी कि हम मच्छरों के प्रजनन स्थानों को समाप्त कर, मच्छरों की जनसंख्या को नियंत्रित कर सकते हैं तथा मच्छरों से फैलने वाले रोगों को बहुत कुछ सीमा तक नियंत्रित कर सकते हैं।

गुरुजी– बहुत सही कहा तुमने बेटा!

शिष्य– गुरुजी पर इन प्रजनन स्थानों की पहचान कैसे हो और इन्हें समाप्त कैसे करें?

गुरुजी– मादा मच्छर घर के छोटे–बड़े पात्रों में जहाँ कई दिन से पानी एकत्रित है जैसे खुले बर्तन, टंकी, कूलर के टैंक, छत की खुली पानी की टंकी, गमले आदि में अण्डे देकर अपनी वंश वृद्धि करती हैं। अत: इन स्थानों में पानी एकत्रित नहीं होने देना चाहिए।

अच्छा तो यही है कि जिन वस्तुओं में पानी जमा हो सकता है यदि ऐसी वस्तुएँ उपयोगी नहीं है तो उन्हें फेंक देना चाहिए, नष्ट कर देना चाहिए या कबाड़ी को रिसाइकिल करने हेतु दे देना चाहिए और यदि वस्तुएँ उपयोगी हैं तो उनमें पानी एकत्रित नहीं हो यह सुनिश्चित करना हम सबकी जिम्मेदारी है।

शिष्य– गुरुजी! हम सब आज से अपने घरों में तो किसी बर्तन आदि वस्तुओं में पानी खुले रूप में जमा नहीं होने देंगे यह सुनिश्चित करेंगे साथ ही और अन्य को भी प्रशिक्षित करेंगे। किन्तु एक प्रश्न है कि घरों के बाहर के मच्छरों के प्रजनन स्थानों (नाले, पोखर, रुका हुआ वर्षा जल आदि) को कौन नष्ट करेगा?

गुरुजी– घर के बाहर के मच्छरों के प्रजनन स्थानों को नष्ट करने की जिम्मेदारी ग्राम पंचायत, नगर पालिका, नगर निगम, मलेरिया विभाग की है। किन्तु यदि ये विभाग अपनी जिम्मेदारी ठीक ढंग से नहीं निभा रहे हैं तो उच्च अधिकारियों या चुने हुए प्रतिनिधियों को इसकी सूचना हमें अवश्य देना चाहिए। ऐसा करने के लिए तुम घर के बड़े सदस्यों की सहायता ले सकते हो।

शिष्य– क्या प्रजनन स्थानों को नष्ट करने के अलावा और भी कोई उपाय है मच्छरों के दंश से बचने के लिए?

गुरुजी– कई अन्य उपाय भी हैं जिनके माध्यम से हम मच्छरों को अपने पास से दूर भगा सकते हैं या फिर काटने से रोक सकते हैं जैसे मच्छर दानी का उपयोग, मच्छर को दूर भगाने वाली क्रीम, स्प्रे तथा रिपिलेंट आदि का उपयोग, नीम आदि का धुआँ, रसायन आदि का स्मोक तथा छिड़काव का उपयोग इत्यादि।

यदि हम मच्छरों के प्रकोप के दिनों में अपने शरीर को अधिक से अधिक ढकने वाले कपड़े पहनते हैं तो भी मच्छरों के दंश से बचा जा सकता है।

शिष्य– गुरुजी अभी तक तो आपने मेरे प्रश्नों के उत्तर में बहुत सारी ऐसी जानकारी दी जो हम विद्यार्थियों को नहीं ज्ञात थी। अब आप अपनी ओर से भी कुछ बताइए न।

गुरुजी– मेरा तो एक ही सुझाव है बच्चों कि तुम्हें हमेशा शारीरिक स्वच्छता और आस–पास की साफ–सफाई के प्रति सजग रहना चाहिए तथा खुले में रखे खाद्य–पदार्थों के सेवन से बचना चाहिए।

ये सावधानियाँ तुम्हें बहुत सारी बीमारियों से दूर रखने में सहायता करेंगी। इसके बाद भी परिवार में किसी को भी अस्वस्थता अनुभव होती है तो तुरंत योग्य चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए क्योंकि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में लगभग सभी बीमारियों की जाँच और उपचार उपलब्ध हैं।

– इन्दौर (म. प्र.)

मुफ्त में
अरे भोंदूमल, मुंह पकड़े रो क्यों रहे हो?
अपने डाक्टर दोस्त से गंदा दांत उखड़वाकर आया था..
डाक्टर तुम्हारा दोस्त है? तब तो रुपये भी कम लिए होंगे..?
नहीं रुपये तो पूरे लिए..
लेकिन दोस्ती के नाते एक दांत के साथ दूसरा दांत मुफ्त में उखाड़ दिया...

दो बेटियों की कहानी

– भगवती प्रसाद द्विवेदी

१९ जनवरी २०२३ का दिन था। शीतलहर से आज थोड़ी राहत मिली थी।

दादाजी धूप में बैठकर अखबार पढ़ रहे थे। सुमन ने आकर चाय की प्याली थमाई।

किन्तु दादाजी ने कप को टेबल पर रख दिया। उनकी दृष्टि एक पन्ने पर ही देर से टिकी हुई थी।

सुमन ने उनका ध्यान खींचते हुए कहा– ''दादाजी! आप तो चाय के बड़े शौकीन हैं। लेकिन आज आपने चाय की तरफ देखा तक नहीं। समाचार–पत्र में कोई विशेष समाचार है क्या ?''

''हाँ बेटे! बहुत विशेष समाचार है। तुम्हारी जैसी ही दो बेटियों की कहानी है।'' दादाजी ने चाय की प्याली को उठाते हुए उत्तर दिया।

सुमन की जिज्ञासा बढ़ गई। उसने कौतूहल से पूछा– ''क्या किया उन दोनों ने ?''

''लुटेरों पर पिस्तौल तान दी। बताओ तो भला। कितनी हिम्मत वाली हैं वे।'' दादाजी ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा।

''अच्छा!'' सुमन स्टूल खींचकर सामने बैठ गई। ''क्या किया उन दोनों ने ? क्या लुटेरों ने उन्हें मार डाला ?''

''अच्छा! तो सुनो। मैं तुम्हें पूरी कहानी ही सुनाए देता हूँ।'' दादाजी ने घटना की शुरुआत कर दी। ''कल बुधवार की ही घटना है यह। अपने राज्य के हाजीपुर शहर में एक बैंक है– उत्तर बिहार क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक। बैंक में ग्राहकों की काफी भीड़ थी।

बाहर दरवाजे पर दो महिला सिपाही तैनात थीं। जूही और शांति। उस बैंक की मैनेजर भी महिला ही हैं–श्रेया।''

''किन्तु हुआ क्या, दादाजी ?'' सुमन ने जल्दी ही असली बात जाननी चाही।

''वही तो बताने जा रहा हूँ।'' दादाजी ने बात को आगे बढ़ाया, ''बैंक में कोई फालतू आदमी तो नहीं जा रहा है ? इसके लिए वे दोनों आने वालों से बैंक में उनके काम के बारे में पूछ रही थीं।

तभी एक ही साथ पाँच युवक दो मोटर साइकिल से उतरकर दरवाजे के अंदर जाने लगे।

गेट पर तैनात जूही ने प्रश्न किया, ''क्या काम है आप लोगों को ?''

''पैसा निकालना है।'' एक ने कहा और सबने हामी भरी।

''पासबुक दिखाइए।'' दूसरी सिपाही शांति ने कहा।

''तुम कौन होती हो पासबुक देखने वाली ?'' एक युवक ने तुनक कर कहा।

तभी दूसरे युवक ने बंदूक तान दी। ''हम बैंक लूटने आए हैं। चुपचाप सरेण्डर कर दो। हाथ ऊपर करो।''

''तुम्हारी इतनी हिम्मत।'' शांति ने निडर हाथों से बंदूक पकड़ ली। फिर तो दोनों ओर से छीना–झपटी होने लगी।

एकाएक जूही ने फुर्ती से पिस्तौल निकालकर

निशाना साधने की गरज से कहा– ''हिलना मत, वरना यहीं भूनकर रख देंगे।''

उसी समय अचानक सड़क पर खड़ी एक औरत चिल्ला उठी– ''दौड़ो–दौड़ो, बचाओ–बचाओ बैंक लुटेरे आ गए हैं।''

सुनकर सड़क पर आते–जाते लोग बैंक की ओर दौड़े।

बेतहाशा भीड़ उमड़ पड़ी। पाँचों लुटेरे हड़बड़ा गये। वे जैसे–तैसे हाथ छुड़कर भाग खड़े हुए। पाँचों ने पैदल ही सरपट दौड़ लगा दी।

आवाज सुनकर ग्राहकों, कर्मचारियों के साथ मैनेजर श्रेया बाहर आईं। उमड़ी भीड़ को देखकर उन्होंने मामले की गंभीरता को भाँप लिया। सबने पूरी कहानी कह सुनाई। फिर तो पुलिस बुलाई गई। स्वयं पुलिस अधीक्षक बैंक में आ पहुँचे। लुटेरों की मोटरसाइकिलें जब्त कर ली गईं। सीसी टीवी कैमरे में पूरी घटना स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

एस. पी. साहब ने दोनों महिला सिपाहियों की प्रशंसा करते हुए कहा– ''बेटियों! हमें तुम पर गर्व है। तुम्हारी निडरता, वीरता और साहस के लिए पुलिस विभाग तुम दोनों को पुरस्कृत कर सम्मानित करेगा। तुमने अपनी जान की चिंता नहीं की। बैंक की लाखों की सम्पत्ति और जान–माल की सुरक्षा की। आप दोनों न साबित कर दिया– ''बेटियाँ बेटों से बढ़कर हैं। शाबाश जूही! शाबाश शांति!''

दादाजी ने समाचार–पत्र में छपी दोनों सिपाहियों की तस्वीरें भी दिखाईं।

''यह तो सचमुच विशेष समाचार है।'' सुमन ने रोमांचित होते हुए कहा– ''दादाजी! मैं भी पुलिस में जाऊँगी।''

''शाबाश सुमन!'' दादाजी ने सुमन की पीठ ठोंकी। उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे जूही और शांति को ही शाबाशी दे रहे हों। उन्हें आज ठंडी चाय भी बहुत प्यारी लग रही थी।

– पटना (बिहार)

☺ छः अँगुल मुस्कान ☺

एक महिला अपनी पड़ोसन से बोली– बहन लोग चांद पर हो आये, मंगल पर जाने की तैयारी चल रही है और एक हम हैं कि अभी तक यहीं पड़े हैं।

पड़ोसन– ठीक कहती हो बहन! मुझे तो घर के कामों से ही फुर्सत नहीं मिलती, तुम क्यों नहीं वहाँ घूम आती?

*****

एक बार एक जज ने कैदी से पूछा– तुम अपनी सफाई में कुछ कहना चाहते हो?

कैदी– क्या कहूँ एक सप्ताह से जेल में साबुन नहीं मिला।

*****

छात्र अध्यापक से– मुझे एक प्रश्न का उत्तर नहीं याद है, क्या मैं नकल करके उसका उत्तर लिख सकता हूँ।

अध्यापक– यह ऑनलाइन परीक्षा नहीं है।

मेरे सरसंघचालक

– नारायण चौहान

किसी भी संघठन के लिए उसकी संचालन पद्धति का निर्धारण एक आवश्यक प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया जितनी सुगम, सरल और सुस्पष्ट होगी संघठन उतनी ही गति से विकसित होकर निरंतर क्रियाशील और दीर्घायु होगा। वर्ष १९२५ में विजयादशमी को जब मेरा जन्म हुआ तो स्वाभाविक रूप से केवल ध्येय सम्मुख था शेष सारी रीति, नीति, कार्यक्रम व पद्धति धीरे–धीरे विकसित हुई।

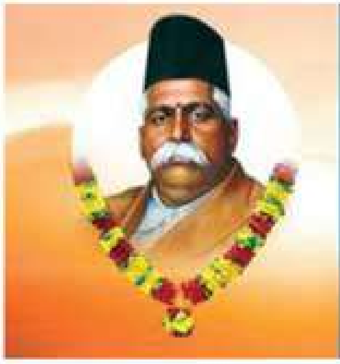

डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार ही मेरे जनक थे। इसलिए स्वाभाविक ही था कि वे मेरे सर्वोच्च अधिकारी होते लेकिन उन्होंने मेरा स्वभाव प्रारंभ से ही ध्येयनिष्ठ रखा व्यक्तिनिष्ठ नहीं।

यही कारण रहा कि मुझे गुरु रूप में भी कोई व्यक्ति नहीं सनातन काल से ही भारतीय संस्कृति का परिचायक परम पवित्र भगवा ध्वज मिला। तथापि किसी भी संगठन को गति उसके कार्यकर्ता ही देते हैं इसलिए कार्यकर्ता स्वयंसेवकों का चिंतन–मनन चलता रहा और संघ प्रमुख कहलाने की इच्छा न होते हुए भी डॉ. केशवराव बलिराम को ९–१० नवम्बर १९२९ को नागपुर में एक बैठक में संघ का सर्वोच्च दायित्व सौंप कर सर संघचालक घोषित कर दिया गया।

डॉ. हेडगेवार जी जन्मजात देशभक्त और अत्यन्त कुशल संघटक थे ही। सहयोगी कार्यकर्ताओं के सामूहिक निर्णय का सम्मान करते हुए डॉक्टर हेडगेवार जी ने जब यह दायित्व स्वीकारा तो कहा कि– ''मैं आपके आदेश का पालन करते हुए यह जिम्मेदारी ले रहा हूँ, परन्तु जैसे ही कोई मुझसे योग्य व्यक्ति मिले आप उसे यह दायित्व सौंप देना। मैं एक सामान्य स्वयंसेवक की तरह उनके साथ काम करता रहूँगा।''

डॉ. हेडगेवार १९४० तक मेरे प्रमुख मेरे प्रमुख रहे। निरंतर मेरे विस्तार में लगे रहने के कारण शरीर की चिंता किए बिना रातदिन मेरे विस्तार के लिए अनथक परिश्रम करते हुए उनका स्वास्थ्य अत्यन्त खराब हो गया और वे २१ जून १९४० को अपना दायित्व एक पत्र के माध्यम से श्री. माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर उपाख्य गुरुजी को सौंप कर मातृभूमि की गोद में चिर निद्रा में सो गए। वे उच्च शिक्षा शिक्षित चिकित्सक थे। पारिवारिक आर्थिक दशा अत्यन्त शोचनीय थी चाहते तो डॉक्टरी करके खूब धन कमा सकते थे। लेकिन आजीवन अविवाहित रहकर बिना निजी आजीविका का कोई साधन किए अपनी सम्पूर्ण क्षमता, योग्यता और ध्येयनिष्ठा से वे भारतमाता की सेवा में ही पूर्ण समर्पित रहे। मैं ऐसे महापुरुष के द्वारा आरंभ पाकर स्वयं धन्यता अनुभव करता हूँ। सर संघचालक परंपरा का आरंभ उन्हीं से होने के कारण वे मेरे **आद्य सरसंघचालक** कहलाए।

डॉ. हेडगेवार जी के सुयोग्य उत्तराधिकारी के रूप में विलक्षण विद्वत्ता व संघटन क्षमता के धनी श्री. माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर मेरे ३ जुलाई १९४० को द्वितीय सर संघचालक बनाए गए। वे अभी तक के इतिहास में मेरे सबसे लम्बे समय ३३ वर्षों तक सर संघचालक रहे।

उनके समय में मेरा विस्तार सम्पूर्ण भारत वर्ष

में तेजी से हुआ। यद्यपि डॉ. हेडगेवार ने अपने अंतिम समय में मेरा राष्ट्रव्यापी लघु विस्तार देख लिया था। श्री. गोलवलकर जी को उनके संघ में आने के पूर्व ही 'गुरुजी' नाम से पुकारा जाने लगा था। उच्च आध्यात्मिक विभूति श्री. गुरुजी ने राष्ट्रकार्य के लिए शंकराचार्य बनने जैसे प्रस्ताव को छोड़कर मेरे विस्तार हेतु रीति, नीति, आचार पद्धति आदि का अपने सुयोग्य साथियों के साथ मिलकर निर्धारण करने में बड़ा योगदान दिया। मेरे विस्तार के लिए पूरे वर्ष भारतमाता की सतत् परिक्रमा करते हुए उनके प्रवास इतने अधिक होते थे कि रेल का डिब्बा ही उनका घर है यह प्रसिद्ध हो चला था।

वे आजीवन अविवाहित रहकर वे मेरे कार्य विस्तार के लिए समर्पित रहे। मेरे कार्यकर्त्ताओं द्वारा मेरे लक्ष्य की शीघ्र प्राप्ति के उद्देश्य से समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में कार्य विस्तार की दृष्टि से मेरे अनेक समविचारी संघटन निर्माण हुए।

५ जून १९७३ को श्री. गुरुजी के महाप्रयाण तक में अनेक विघ्न-बाधाओं और प्रतिबंध के दुष्चक्र को भेदकर सम्पूर्ण भारत में फैल चुका था।

(गत अंक में इस स्तंभ में त्रुटिवश श्री. बाबासाहब आपटे की शिक्षा एम.बी.बी.एस. उल्लिखित हो गई है। यह डॉ. हेडगेवारजी की शिक्षा उपाधि है-संपादक)

- इन्दौर (म. प्र.)

जयंती - ११ अप्रैल

पूज्य ज्योतिबा फुले

- निखिलेश महेश्वरी

महात्मा ज्योतिबा फुले के जीवन कार्य और उनके सामाजिक दृष्टिकोण को देखने से ध्यान में आता है कि महाराष्ट्र में आए समाज परिवर्तन व सामाजिक-क्रान्ति में उनके योगदान का कितना महत्त्व था। उन्होंने समाज में विकृत हुई सामाजिक व्यवस्था और पीड़ित, शोषित, अभावग्रस्त शूद्रातिशूद्र समाज की दुर्व्यवस्था को बहुत ही निकट से देखा। धनंजय कीर लिखते हैं कि- ''ज्योतिबा फुले, भूखे-कंगाल, बुद्धि से बौने हो चुके व अनन्त कष्ट भोगने वाले कनिष्ठ वर्ग पर होने वाले अन्याय और उनके कष्ट दूर करने के लिए आन्दोलन चलाने वाले पहले भारतीय नेता थे। ज्योतिबा का संघर्ष चले आ रहे दलितपन के निवारण और दलितोद्धार के लिए था।''

सर्वांगीण शोषण का ग्रास बने समाज के प्रत्येक घटक शूद्रातिशूद्र, किसान, मजदूर, सम्पूर्ण नारी समाज, समाज द्वारा घोषित चोर जाति, जनजाति के प्रति उनके मन में व्याकुलता थी। अस्पृश्यों पर होने वाले अन्याय के लिए उन्होंने ब्राह्मणेत्तर बहुजन समाज को भी दोषी माना। जहाँ-जहाँ शोषण दिखाई दिया, उसके निवारण के लिए वह दौड़ पड़े। और उनका यह कार्य चालीस वर्ष तक निरंतर जारी रहा।

उनके पूर्व और उनके समकालीन समाज सुधारों की कृतिशीलता की तुलना में ज्योतिबा का कार्य असामान्य था। तात्कालिक सुधारों के बारे में ज्योतिबा की मूल प्रेरणा ऐसे शोषित वर्ग को पहचान देने की थी। अपने आंदोलन से शोषित वर्ग के ऊपर हो रहे अन्याय के प्रति चिढ़ उत्पन्न करना और मनुष्य होने के जन्मजात अधिकार को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करने की जिद निर्माण करने की उनकी भावना थी। इसके पीछे सामाजिक न्याय, समता, प्रतिष्ठा, ईश्वर के बारे में बुद्धिजनित निष्ठा और मानवतावाद का उनका शाश्वत तत्त्वज्ञान था।

व्यक्तित्व व चारित्र्य की मानवीय एकात्मता के कारण महात्मा की उपाधि उन्हें सहज ही प्राप्त हुई। वहीं ११ मई १९८८ को मुंबई की जनता की ओर से उन्हें महात्मा की उपमा देकर सम्मानित किया गया। वस्तुत: यह एक औपचारिकता मात्र थी, वास्तव में तो वह 'महात्मा' पद का गौरव था।

- भोपाल (म. प्र.)

पुस्तक-परिचय

कहानियों में कहानियाँ वाहनों की कहानियाँ

मूल्य- ३५०/-

प्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. बानो सरताज की लेखनी बच्चों के लिए सतत् ज्ञान वर्द्धक सृजन करती रहती है। प्रस्तुत पुस्तक में वर्तमान युग के प्रमुख संसाधनों पर ज्ञानवर्द्धक रोचक लेखमाला सचित्र संजोई गई है।

प्रकाशक- मार्डन पब्लिशिंग हाऊस, गोला मार्केट, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

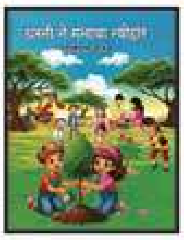

धरती ने मनाया त्योहार

मूल्य- २००/-

बाल साहित्य के अनुभवी शिल्पकार श्री. श्यामपलट पाण्डेय की बाल कहानियों की यह सुन्दर पुस्तक बहुत कुछ सिखाती है बताती है समझाती है और वह भी उत्सुकता जगाते हुए।

प्रकाशक- साहित्यागार, धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३०२००३ (राजस्थान)

गुल्लू और फुदकू

मूल्य- २५०/-

विख्यात बाल साहित्य सर्जक डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल की १८ मनभाती, रोचक एवं मनोरंजनपूर्ण बाल कहानियों की यह नई पुस्तक उनकी अन्य पुस्तकों की भाँति ही आपको लुभाएगी।

प्रकाशक- अंकुर प्रकाशन, ए - ३१, न्यू गुप्ता कॉलोनी, दिल्ली-११०००९

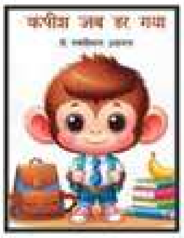

कपीश जब डर गया

मूल्य- ९०/-

अद्‌भुत कल्पनाशीलता से भरी इस रोचक बाल कहानी की पुस्तक के रचयिता डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल ने इन कहानियों में बालमन की उन्मुक्त उड़ान के साथ नैतिक बोध का आधार भी दिया है।

प्रकाशक- आकांक्षा प्रकाशन, एफ-१५-ए, विजय ब्लॉक, विकास मार्ग, लक्ष्मीनगर, दिल्ली-११००९२

गाँव का चिराग

मूल्य- १००/-

बाल साहित्यकार प्रियंका अग्रवाल की इस पुस्तक में आप बाल पाठकों को ५ रोचक बाल कहानियाँ प्रस्तुत हैं। बाल मन की जिज्ञासु वृत्ति को उत्तम पोषण प्रदान करती हैं ये कहानियाँ।

प्रकाशक- एक्सप्रेस पब्लिशिंग नं.-८, ३-क्रॉस स्ट्रीट चेन्नई-६००००४ (तमिलनाडू)

चंदू की टाइम मशीन

– रजत कुमार अनुभवी

नहीं, यह चाँदनी चौक में रहने वाला चंदू नहीं, यह बिहार के पटना जिले वाला, चमकीला चंदू था। उम्र १२, रंग सांवला मन बावला, पाँचवी कक्षा का शेर, फ्लाईंग जट्‌ट संग रखता था याराना। वह रोज उठता था ७:०० बजे, शाला पहुँचता था आधी नींद लिए, माँ की मार, टीचर की डाँट, मित्रों संग हँसी-हाहाकार, काम थे उसके। किन्तु डर सताता था जब भी पूछ लिया जाए कोई सवाल।

चंदू एक औसतन बच्चा था। ना पढ़ाई में वह बहुत अधिक श्रेष्ठ था। ना ही खेल कूद में, ना ही किसी और चीज में उसकी रुचि थी। वह प्रतिदिन किसी न किसी की फटकार सुनता रहता था। सिर नीचे झुकाए उसे फर्क तो पड़ता था, किन्तु क्या ही उत्तर दे वह, उस पर तीर से भी तेज दागे गए प्रश्नों का। वह थक चुका था, हार चुका था, यह रोजमर्रा की चिक-चिक से। यह उबाऊ जिंदगी ही उसकी एक मात्र जिंदगी बन चुकी थी।

किन्तु उसे अब कुछ करके दिखाना था। सबका मुँह बंद करना था, किन्तु वह साधारण बच्चा आखिर क्या ही कर सकता था?

एक दिन जब सुबह झड़ाकेदार वर्षा के कारण कक्षा में गिन चुनकर ८ से ९ बच्चे ही आए थे। उस दिन विज्ञान के शिक्षक जब कक्षा में पहुँचे तो उन्होंने बच्चों को कुछ मनोरंजक कहानी सुनाने का निर्णय किया।

उन्होंने 'टाइम मशीन' के बारे में बच्चों को एक कहानी के माध्यम से बहुत ही सरल भाषा में समझाया। कैसे एक टाइम मशीन से आप भूत, वर्तमान और भविष्य की सैर कर सकते हैं। आपका मन करे तो आप भूतकाल में जाकर अपना जन्म स्वयं देख सकते हो, अपने माता-पिता का बचपन, यहाँ

तक आप डायनासोर के युग में प्रवेश कर उन विशाल जीवों को अपनी आँखों से टटोल सकते हो।

या आपका मन थोड़ा नटखट है तो, आप अपने भविष्य में भी झाँक सकते हो। आप क्या काम कर रहे हो, कौन–सी नौकरी कर रहे हो, या अपना कोई व्यापार, या फिर आप दुनिया के एक नामचीन अभिनेता हो, किससे आपकी शादी हुई, कितने आपके बच्चे हुए या आपकी मृत्यु कब हुई, संभावनाएँ तो अनंत हैं। किसे क्या पता किन्तु आपके हाथों में वो ताकत होगी, जिससे आप ये सब अपनी नंगी आँखों से अनुभव कर सकोगे। बहरहाल, ऐसी कोई चीज दुनिया में बनी नहीं है और बनाना भी लगभग असंभव है।

चंदू ने आज तक कक्षा में इतनी ध्यान से कोई बात सुनी नहीं होगी। यह टाइम मशीन नामक शाब्दिक कीड़ा उसके दिमाग में बैठ गया। अंततः उसने ठान लिया कि वह एक 'टाइम मशीन' बनाकर रहेगा।

आज ७ वर्ष बाद उसकी १२वीं कक्षा का परिणाम आने वाला है। उसने पहले से ही एक बहुत ही प्रख्यात इंजीनियरिंग कॉलेज में मेरिट से प्रवेश ले लिया है। आखिर क्या बदल गया इन ७ वर्षों में ?

दरअसल सच्चाई यह है कि चंदू ने 'टाइम मशीन' का आविष्कार स्वयं के बलबूते पर ४ से ५ वर्षों के भीतर ही कर लिया था। किन्तु बात में पेंच यह थी कि वह केवल भविष्य में एक दिन आगे ही जा सकता था।

वह इसकी सहायता से कल होने वाली सारी आवश्यक घटनाओं को पहले ही देख लेता और वर्तमान में आकर हर काम को सही और उत्तम प्रकार से पूर्ण कर देता, ऐसा करते–करते वह अपने सभी मित्रों और सभी सहपाठियों से आगे निकल गया। और अब आगे भी वह ऐसा कर, सभी को पीछे छोड़ता चला जाएगा।

खैर, ऐसा कुछ नहीं हुआ था। वह टाइम मशीन बनाने तो निकला था, किन्तु यह तथ्य सबको ज्ञात है कि फिलहाल तो यह कार्य असंभव है। और चंदू अकेला, बिना किसी सहायता और साधन के अपने पूरे जीवन में यह कार्य संपन्न नहीं कर पाता।

किन्तु पते भी बात यह थी कि, वह यह मशीन बनाने के चक्कर में अपनी पढ़ाई पर ध्यान लगाने लगा। वह परिश्रम करने लगा और एक लक्ष्य को निर्धारित करके उसकी ओर अग्रसर रहा। भले ही उसने अपने लक्ष्य को प्राप्त न किया हो किन्तु उसकी खोज में उसने बहुत कुछ प्राप्त किया और अपने जीवन को एक सही दिशा दी।

अब, उसकी १२वीं का परिणाम पत्र आ चुका है। उसने अपने जिले में टॉप किया है। सब बहुत प्रसन्न हैं। किन्तु चंदू को अभी भी चैन नहीं है, उसे और प्राप्त करना है। उसकी यह भूख इतनी जल्दी शांत नहीं होगी या फिर होगी जब 'चंदू की टाइम मशीन' भौतिक रूप में बनकर तैयार होगी।

– पटना (बिहार)

बाल लेखनी – कविता

तितली रानी

– सम्यका अग्रवाल, मुंबई

तितली रानी बड़ी सयानी,
तुम लगती हो हमको प्यारी।
कितने सुंदर पंख तुम्हारे,
अपनी धुन में उड़ती जाती।

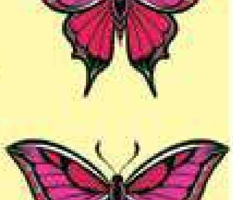

शाम ढले तुम गुम हो जाती,
रात पतंगों से भर जाती,
इनकी फौजें हमें सताती।
याद तुम्हारी हमको आती,

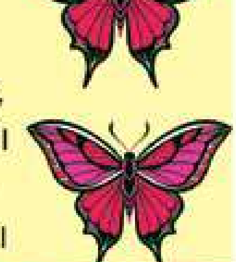

नजर हमारी तुमको ढूँढ़े,
पर तुम कहीं नजर ना आती।
फिर हम सुबह का रस्ता देखें,
जब तुम फूलों पर मँडराती,

हमने सबको देख लिया पर,
हमको तो बस तुम ही भाती।
तितली रानी बड़ी सयानी,
तुम लगती हो हमको प्यारी।

गोस्वामी तुलसीदास जी कृत अध्यात्म पहेली

सब में राम

नाम के अक्षर चौगुन कीजै,
पाँच मिलाय दो ही गुन लीजै।
आठ का भाग वाहि में कीजै,
शेष बच्चे वाहे चित दीजै।।

अपने नाम के अक्षरों की संख्या को चार से गुणा करो फिर उसमें पाँच मिलाओ और दो से गुणा करो। जो प्राप्त हो उसमें आठ का भाग दे दो जो शेष बचे वही ध्यान देने योग्य है।

उदाहरण– घनश्याम = ४ अक्षर

४×४ = १६, १६+५ = २१,
२१×२ = ४२, ४२ ÷ ८ =५ शेष बचे २

अब इसका रहस्य समझे नाम यानि प्राणी उसमें चार पुरूषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का गुणन और पंच ज्ञानेद्रियों का योग तत्पश्चात् उसे लौकिक और पारलौकिक या स्वार्थ व परमार्थ से गुणा करना और अष्टधाप्रकृति (भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि व अहंकार) में बाँट देना। जो शेष बचे वह ही संसार का सार तत्त्व है वह है २ अर्थात् 'राम'।

किसी भी नाम व उसके कर्म, व्यापार के बाद सारे जोड़ गुणा भाग करके भी अंतिम शेष 'राम' ही आता है।

आपकी पाती

आज दो वर्ष के बाद 'देवपुत्र' का अंक हाथ में लेकर पढ़ने को मिला। देवपुत्र अपनी वही पुरानी पहचान बनाई हुई नजर आई। संपादकीय की महक आज भी ताजी–ताजी लगी। कहानियाँ, कविताओं का भरपूर रसास्वादन करने को मिला। चित्र कथाएँ और पुस्तक परिचय अपनी उपस्थिति दर्ज कराती नजर आई। आदरणीय संपादक भाई गोपाल माहेश्वरी की संपादकीय में निकल रही देवपुत्र हर पाठक और हर लेखक का आज भी मन मोह रही है।

'देवपुत्र' से हमारा स्नेह इसी तरह बना रहेगा। बस इतना ही कहना चाहूँगा।

– बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान'
गोरखपुर (उ. प्र.)

कौन-सा वादा

चित्रकथा : देवांशु वत्स

कविता

हाथी दादा अच्छे

– भाऊराव महंत

हाथी दादा जो यह तुमने,
सूँड़ अनोखी पाई ?
इतनी लम्बी-मोटी होकर,
क्यों तुमको मन भाई ?

और किसी के सूँड़ नहीं है,
कुछ तो होगा कारण।
जरा हमारी जिज्ञासा का,
दादा करो निवारण।

बच्चों की ये बातें सुनकर,
बोले हाथी दादा।
बड़ी देह होने से मुझको,
भोजन लगता ज्यादा।।

घास-पत्तियाँ इसी सूँड़ से,
खाकर पेट भरूँ मैं।
और इसी से बड़े पेट का,
सपना पूर्ण करूँ मैं।।

पानी भरकर इसी सूँड़ से,
पड़ता मुझे नहाना।
देह बड़ी होने पर भी मैं,
करता नहीं बहाना।।

काम बड़े से बड़े इसी से,
आसानी से होते।
जो भी पंगा लेता मुझसे,
पड़े मार तो रोते।।

मेरे इस मोटे शरीर की,
इससे ही सुंदरता।
अपने कष्टों को अक्सर मैं,
अरे! इसी से हरता।।

हाथी की बातों को सुनकर,
नाच रहे थे बच्चे।
ताली बजा-बजाकर कहते,
हाथी दादा अच्छे।।

– बालाघाट (म. प्र.)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

प्रकाशन तिथि २०/०३/२०२५ प्रेषण तिथि ३०/०३/२०२५ प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

अप्रैल २०२५ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी